नीतिवचन

1 दाऊद क पूत अउ इस्राएल क राजा सुलैमान क नीतिवचन (कहावतन)।

2इ सबइ बातन क मनइ क बुद्धि क पावइ, अनुसासन क ग्रहण करइ, जेनसे समुझ स भरी बातन क गियान होइ, 3मनई धरम स पूर्ण, निआव स पूर्ण सत्तय स पूर्ण क करम करइ क विवेकसील अउर अनुसासन मँ रहइ क जिन्नगी पावइ,

4सहल सोझवाले लोगन क इ सिखावाइ बरे कि विवेकसील जिन्नगी कइसे बिताइ जाइ, अउर जवान लोगन क गियान अउर बुद्धीमत्ता सिखावइ बरे, लिखा गवा अहइँ।

5बुद्धिमान लोगन क ओनका सुनिके आपन बुद्धि अउर समुझदारी बढ़ावइ द्या।

6एह बरे लिखा गवा, ताकि मनई नीतिवचन, गियानी क दृष्टान्तन क अउर पहेली भरी बातन क समुझ सकइँ। 7यहोवा क डर मानब गियान क प्रारम्भ अहइ। मुला मूरख जन तउ बुद्धि अउ सिच्छा क निरर्थक मानत ही।

विवेकपूर्ण बना चिताउनीः प्रलोभन स बचा

8हे मोर पूत, आपन बाप क सिच्छा पइ धियान द्या अउर आपन महतारी क नसीहत क जिन बिसरा। 9उ पचे तोहार मूँड़ सजावइ क मुकुट अउ सोभा स जोरइ तोहरे गले क हार बनिहीं।

चिताउनीः बुरी संगत स बचा

10हे मोर पूत, अगर पापी लोग तोहका बहलावइ फुसलावइ आवइँ ओनकर कबहुँ जिन मान्या। 11अउर अगर उ पचे कहइँ, "आवा हमरे संग। आ, हम पचे कउनो क घाते मँ बइठी। आ, निर्दोख पइ छुपिके वार करी। 12आ, हम पचे ओनका जिअत ही सारा क सारा लील जाइ वइसे ही जइसे कब्र लील लेत हीं। जइसे खाले पाताल मँ कहूँ फिसरत चला जात ह। 13हम सबहिं बहोत कीमती चिजियन पाइ जाब अउर आपन इ लूट स घरवा भरि लेब। 14आपन भाग्य क पाँसा हम लोग आपन बीच लोकावा, हम पचे सामुहिक बटुआ क सहभागी होब।"

15हे मोर पूत, तू ओनकर राहन पइ जिन चला, तू आपन गोड़ ओन लोगन क राहे पइ जिन रखा।

16काहेकि ओनकर गोड़ बुराई क ओर बढ़त हीं। उ पचे रकत बहावइ क बहोत सन्नध रहत हीं।

17उ समइ जाल क फइलाना केतना बेकार अहइ जबकि पंछी पूरी तरह स लखत हीं। 18जउन कउनो क रकत बहावइ क इंतजार मँ बइठा अहइँ उ पचे अपने आप जालि मँ फँसि जइहीं। 19उ सबइ जउन बेइमानी क धन हासिल करइ क जतन करत ह उ पचे आपन जिन्नगी उहइ मँ खो देत हीं।

चिताउनीः बुद्धि हीन जिन बना

20बुद्धि, गलियन मँ गोहरावत ह, उ सर्वजनिक जगहन मँ आपन आवाज उठावत ह। 21सोर स भरी गलियन क नोक्कड़ पइ गोहरावत ह, सहर क फाटक पइ आपन भासण देत हः

22"अरे नादान लोगो! तू कब तलक आपन नादानी स पिरेम करत रहब्या? हँसी ठट्ठाकरइवालो, तू कब तलक ठट्ठा करने मँ आनन्द लेब्या? अरे मूर्खो, तू कब तलक गियान स घिना करब्या? 23अगर मोर फटकार तोह पइ असर डावत तउ मइँ तोह पइ आपन हिरदय उड़ेर देत अउर तोहका अपने सबहिं विचार देखाइ देतेउँ।

24"मुला काहेकि तू तउ मोका नकार दिहा जब मइँ तोहका गोहराएउँ, अउर कउनो धियान नाही दिहस, जब मइँ आपन हथवा बढ़ाए रहेउँ। 25तू मोर सबहि उपदेस क उपेच्छा किहा अउर मोर फटकार कबहुँ नाहीं स्वीकार किहा। 26एह बरे, बदले मँ, मइँ तोहरे नासे पइ हँसब। मइँ हँसी ठट्टा करब जब तोहार बिनास तोहका घेरी। 27जब बिनास तोहका वइसे ही घेरी जइसे खउफनाक बबूला क चक्रवाद घेरत ह, जब बिनास जकड़ी, अउर जब बिनास अउ संकट तोहका बोर देइही।

28"तब, उ पचे मोका गोहरइही किंतु मइँ कउनो भी जवाब नाहीं देबउँ। उ पचे मोका हेरत फिरिहीं मुला नाहीं पइहीं। 29काहेकि उ पचे हमेसा गियान स घिना करत रहेन, अउर उ पचे कबहुँ नाही चाहेन कि उ पचे यहोवा स डेराइँ। 30काहेकि उ पचे, मोर उपदेस कबहुँ धारन नाहीं किहन, अउर मोर डाट-फटकार क रद्द करिहीं। 31उ पचे अपन जीवन क करमन क फल जरूर भोगिहीं, उ पचे आपन बुरे जोजना स खुद आपन पेट भरिहीं।

32"नादान लोगन क हटी ओनका ही बिनास करिहीं मूरखन लोगन क लापरवाही वाला रवैया ओनका नस्ट कइ देइ। 33मुला जउन मोर सुनी उ सुरच्छित रही, उ बगैर कउनो नोस्कान अउर कउनो डर क हमेसा चैन स रही।"

बुद्धि क नैतिक लाभ

2 हे मारे पूत, अगर तू मोरे बोध बचनन क सुना अउर मोर हुकुम मन मँ बटोरा, 2अउर तू बुद्धि क बातन पइ कान लगावा, मन आपन समुझदारी मँ लगावत भए, 3अउर अगर तू अन्तदृस्टि बरे गोहरावा, अउर तू समुझबूझ क बरे पुकारा, 4अगर तू एका अइसे हेरा जइसे कउनो

कीमती चाँदी क हेरत ह, अउर तू एका हेरा, जइसे कउनो
छुपे भए खजाना क हेरत ह, 5तब तू यहोवा क डर क
समुझब्या अउर परमेस्सर क गियान पउब्या।
6काहेकि यहोवा बुद्धि देत ह अउर ओकरे मुँह स ही
गियान अउ समुझदारी क बातन फूटत हीं। 7ओकरे भंडारे मँ
खरी बुद्धि ओनके बरे रहत ह जउन खरा अहइँ। अउर
ओनके बरे जउन कि इमानदारी स रहत ह एक ढाल जइसे
अहइ। 8उ निआव क मारग क रखवारी करत ह अउर
आपन वफादार लोगन क राह क रच्छा करत ह।
9तबहिं तू समुझब्या कि नेक निआब अउर इमानदारी का
अहइ। इ सबइ नीक चिजियन अहइ। 10तउ बुद्धि तोहरे मने
मँ प्रवेस करी अउर गियान तोहरी आतिमा क आनन्दित
करी।
11तोहका नीक बुरा क बोध बचाइ, समुझबूझ भरी बुद्धि
तोहार रखवारी करी। 12बुद्धि तोहका बुरे लोगन क राहे स
बचाइ। बुद्धि तोहका ओन लोगन स बचाइ जउन बुरी बात
बोलत हीं। 13अँधियारी गलियन मँ भटकइ बरे उ पचे
सहल-सोझ राहन क तजि देत रहत हीं। 14उ पचे बुरे करम
करइ मँ हमेसा आनन्द मनावत हीं। उ पचे बुरे कार्य मँ
हमेसा मगन रहत हीं। 15ओन लोगन पइ बिस्सास नाहीं कइ
सकित। उ पचे लबार अहइँ अउर छल करइवाला अहइँ।
मुला तोहार बुद्धि अउर समुझ तोहका इन बातन स
बचायेगी।
16इ बुद्धि तोहका बदकार मेहरारु अउ ओकर चापलूसी
स भरी बातन स बचाइ। 17जउन आपन जवानी क साथी
तजि दिहन वाचा क उपेच्छा परमेस्सर क समच्छ किहे रहा।
18काहेकि ओकर घर मउत क गड्ढा मँ अहइ अउर ओकर
राहन नरक मँ लइ जात हीं। 19जउन भी ओकरे घर जात ह
उ कबहुँ नाहीं लउटि पावत अउर ओका जिन्नगी क राहन
कबहुँ नाहीं मिलतिन।
20एह बरे तू नीक लोगन क मार्ग पइ चलइ चाही अउर
तेहका हमेसा सत्यता क मार्ग पइ बना रहे चाही।
21इमानदार जन अउर बे कसूर लोग आपन धरती पइ
बसा रइहीं। 22मुला जउन दुट्ठ धोका बाज अहइँ ओनका
धरती स हटा दीन्ह जइहीं।

उत्तिम जिन्नगी स संपन्नता

3 हे मोर पूत, मेरी सिच्छा क जिन बिसरा, बल्कि तू मोर
आदेसन क आपन हिरदय मँ बसाइ ल्या। 2काहेकि उ
सबइ तोहार जिन्नगी क लम्बी अउर सान्तिमइ बनाहीं।
3वफादारी अउर सच्चाई क कबहुँ भी आपन स अलग
न होइ द्या। तू एनका हार क नाई अपने गले मँ डावा।
एनका आपन हिरदय क पटल पइ लिख ल्या। 4इ तरह स
तू सफल होब्या अउर परमेस्सर अउ मनई दुइनउँ तोहसे
आन्नदित होब्या।

यहोवा मँ बिस्सास राखा

5आपन पूरे हिरदय स यहोवा मँ बिस्सास राखा। तू अपनी
समुझ पइ निर्भर जिन करा। 6तू आपन सबइ करमन मँ
जेका तू करत ह परमेस्सर क इच्छा क याद राखा। उहइ
तोहार सब राहन क सोझ करी। 7आपन ही आँखिन मँ तू
बुद्धिमान जिन बना, यहोवा स डरेत रहा अउर बुराई स दूर
रहा। 8एहसे तोहार बदन पूरा तन्दुरूस्त रही अउर तोहार
हाड्डियन पुट्ठ होइहीं।

यहोवा क अर्पण कइ द्या

9आपन सम्पत्ति स, अउर आपन उपज स पहिले फलन
स यहोवा क आदर करा। 10तोहार भण्डार बहुतायत स भरि
जइहीं, अउर तोहार मधु क बर्तन दाखरस स उमण्डत रइहीं।

यहोवा क दण्ड अंगीकार करा

11हे मोर पूत, यहोवा क अनुसासन क रद्द जिन करा।
तोहका सुधार करइ क ओकर प्रयास बरे बुरा जिन बोला।
12काहेकि यहोवा सिरिफ ओनहीं क डाँटत ह जेनसे उ
पिआर करत ह। वइसे ही जइसे बाप उ पूत क डाँटइ जउन
ओका बहोतइ पिआरा अहइ।

विवेक क महत्व

13धन्य अहइ उ मनई, जउन बुद्धि पावत ह। उ मनई
धन्य अहइ जउन समुझ प्राप्त करइ। 14बुद्धि, कीमती चाँदी
स जियादा लाभ देइवाली अहइ, अउर सोना स जियादा
उत्तिम प्रतिदान देत ह। 15बुद्धि मणि माणिक स जियादा
कीमती अहइ। जेका तू चाह सक्या। सबइ चिजियन मँ स
कउनो भी चीज जेका तू सायद कि चाह रखत ह ओकर
बराबरी क नाहीं हो सकत ह।
16बुद्धि क दाहिन हाथे मँ सुदीर्घ जिन्नगी अहइ अउर
ओकरे बाएँ हाथे मँ सम्पत्ति अउ सम्मान अहइ। 17ओकर
मारग मनोहर अहइँ अउर ओकर सबहिं राह सान्ति क रहत
हीं। 18बुद्धि ओनके बरे जिन्नगी क दरखत अहइ जउन
एका गले लगावत ह। उ पचे हमेसा धन्य रइहीं जउन
मजबूती स बुद्धि क थामे रहत हीं।
19यहोवा धरती क नेंव बुद्धि स धरेस, उ समुझ अकासे
क स्थिर किहस। 20ओकरे ही गियान स गहिर सोतन फूटि
पड़ेन अउ बादर ओसे क कण बरसावत हीं।
21हे मोर पूत, तू अपनी निगाह स बुद्धि क लुप्त जिन
होइ द्या। किन्तु बजाए एका आपन जोग्यता क सही फैसला
लइ बरे अउर विवेक बरे रच्छा करा। 22उ पचे तउ तोहरे
बरे जिन्नगी बन जइहीं, अउर तोहरे कंठे क सजावइ क
एक ठु आभूसण। 23तब तू सुरच्छित बना अपना मार्ग पर
चलेहीं अउर तोहार गोड़ कबहुँ ठोकर नाहीं खइहीं।
24तोहका सोवइ पइ कबहुँ डर नाहीं खाहीं अउर सोइ जाए
पइ तोहार नींद मधुर होइ। 25तू आकस्मिक बिनासे स या उ
तबाही स जउन दुट्ठ लोगन पइ आवत ह जिन डेराअ।
26काहेकि यहोवा तोहार संग होइ, अउर उ तोहरे गोड़े क
फँदा मँ फँसइ स बचाइ।
27जउन लोग नीक चीज क हकदार अहइ ओनका उहइ
दइ स इन्कार जिन करा। जब तू नीक करइ क जोग्य ह
तउ एका करा। 28जब आपन पड़ोसी क देब तोहरे लगे धरा
होइ तउ ओहसे अइसा जिन कहा कि “बाद मँ आया काल्हि
तोहका देब।”

29तोहार पड़ोसी बिस्सास स तोहरे लगे रहत होइ तउ
ओकरे खिलाफ ओका नोस्कान पहोंचावइ बरे कउनो सडयंत्र
जिन रचा।
30बिना कउनो कारण क कउनो मनइ क संग जउन कि
तोहका कउनो छति नाहीं पहोंचाएस ह बहस जिन करा।
31कउनो उपद्रवी मनई स तू जलन जिन करा, अउर
ओकर कउनो भी राहे क अनुसरन जिन करा। 32काहेकि
यहोवा कुटिल लोगन स घिना करत ह अउ इमानदार लोगन
क अपनावत ह।
33दुट्ठ मनई क घरे यहोवा क सराप रहत ह, उ नेक क
घरे क आसीर्वाद देत ह।
34उ स्वार्थी अउर घमंडी लोगन क हँसी उड़ावत ह, मुला
विनर्म लोगन पइ उ मेहरबानी करत ह।
35विवेकी जन तउ आदर पइहीं, मुला उ मूर्खन क,
लज्जित ही करी।

विवेक क महत्व

4 हे मोर पूतो, बाप क सिच्छा क सुना ओह पइ धियान
द्या अउर तू समुझबूझ पाइ लया। 2मइँ तू पचन्क
गहिर-गंभीर सिच्छा देत हउँ। मोर इ सिच्छा क तू पचे जिन
तज्या।
3जब मइँ आपन बाप क घर एक बालक रहेउँ अउर
महतारी क बहोतइ कोमल एकलौता गदेला रहेउँ, 4उ मोका
सिखावत रहा, "मोरे सिखिया का पूर्ण रूप स पालन करा।
जदि तू मोर आदेसन क माना तउ तू जिअब। 5तू बुद्धि प्राप्त
करा अउ समुझबूझ प्राप्त करा, मोर वचन जिन बिसरा अउर
ओनसे जिन डुगा, 6बुद्धि जिन तजा। उ तोहार रच्छा करी।
ओहसे पिरेम करा उ तोहार धियान राखी।"
7बुद्धि सबन त नीक बाटइ: सब कछू दइके भी बुद्धि
प्राप्त करा। गियान प्राप्त करा। 8बुद्धि स पिरेम करा। उ
तोहका महान बनाहीं। ओका तू गले स लगाइ ल्या, उ
तोहार सम्मान बढ़ाई। 9उ तोहरे मूँड़े पइ सोभा क माला धरी
अउर उ तोहका एक ठु वैभव क मुकुठ देइ।
10सुना, हे मोर पूत! जउन कछू मइँ कहत हउँ तू ओका
ग्रहण करा। तू अनगिनत बरिस जिअत रहब्या। 11मइँ तोहका
बुद्धि क मार्गे पइ चलइ क राह देखावत हउँ, अउर सरल
मार्गन पइ अगुवाई करत हउँ। 12जब तू अगवा बढ़ब्या
तोहार गोड़ रूकावट नाहीं पइहीं, अउर जब तू दउड़ब्या
ठोकर नाहीं खाब्या। 13सिच्छा क थामे रहा, ओका तू जिन
छोड़ा। एकर रखवारी करा। इहइ तोहार जिन्नगी अहइ।
14तू दुट्ठ लोगन क राहे पइ कदम जिन धरा। बुरे
लोगन क राहे पइ जिन चला। 15तू एहसे बचत रहा। एह क
ओर कदम जिन बढ़ावा। एहसे तू मुड़ि जा अउर एकरे बगल
स गुजर जा। 16उ पचे बुरे करम किए बगैर सोइ नाहीं
पउतेन। उ पचे नींद खोइ चुकत हीं जब तलक कउनो क
नाहीं गिरउतेन। 17उ पचे तउ बस हमेसा नीच होइ क रोटी
खात हीं अउर हिंसा क दाखरसपिअत हीं।
18मुला नीक लोगन क राह वइसे होत ह जइसे भिंसारे
क किरण होत ह, जउन दिन क पूर्ण होइ तलक आपन
प्रकास मँ बढ़त ही चली जात ह। 19मुला दुठ्न लोगन क
मारग अँधियारा जइसा होत ह। उ पचे नाहीं जानत ह कि
केकर कारण उ पचे ठोकर खात ह या गिरत ह।
20हे मोर पूत, जउन कछू मइँ कहत हउँ ओह पइ तू
धियान द्या। मोर बचनन क तू कान लगाइके सुना।
21ओनका आपन दृस्टि स ओझर जिन होइ द्या। आपन
हिरदय पइ तू ओनका धरे रहा। 22काहेकि जउन ओनका
पावत हीं ओनके बरे उ सबइ जिन्नगी बन जात हीं अउर उ
पचे एक मनई क संपूर्ण तने क तन्दुरूस्ती बनत हीं।
23सबन स बड़की बात इ अहइ कि तू आपन विचार क
बारे मँ होसियार रहा। काहेकि तोहार विचार जिन्नगी क
कब्जे मँ राखत हीं।
24तू आपन मुँह स कुटिलता क दूर राखा। तू आपन
ओंठनस गलत बात दूर राखा। 25आपन आँखिन क हमेसा
सिधे रखा, आपन पलकन क समन्वा क ओर रखा।
26आपन गोड़न बरे तू सोझ मारग बनावा। बस तू ओन राहन
पइ चला जउन निहचइ ही सुरच्छित अहइँ।
27दाहिने क या बाएँ क जिन डुगा। तू आपन गोड़न क
बुराई स रोके रहा।

पराई मेहरारू स बचा रहा

5 हे मोर पूत तो मोरी बुद्धि क बातन पइ धियान द्या।
मोर बुद्धिमानी क सिच्छा क धियान स सुना। 2ताकि
तोहार भला-बुरा क चेतना सुरच्छित रहइ अउर तोहरे ओंठन
गियान कि सुरच्छा करइ। 3काहेकि कउनो पराई मनइ क
पतनी आपन ओंठन क मधुर बातन स तोहका लुभा सकत
ह, ओकर ओंठन क वाणी तेल स भी जियादा चिकनी होत
ह। 4अंत मँ उ तोहरे बरे भयंकर दु:ख दर्द लाहीं उ दुधारी
तरवार क नाई अहइ। 5ओकर गोड़ मउत क गड्ढा कइँती
बढ़त हीं अउर उ तोहका सिधे कब्र तलक लइ जात हीं।
6उ कबहुँ भी जिन्नगी क मारग क नाहीं सोचत। ओकर
राहन खोटी अहइँ। किंतु हाय्य, ओका मालूम नाहीं।

बिभिचार बिनासे क मूल बाटइ

7अब हे मोरे पूतन, तू मोर बात सुना। जउन कछू भी मइँ
कहत हउँ ओहसे जिन मोड़ा। 8तू अइसी राह पइ चला जउन
ओहसे काफी दूर होइ। ओकर घरे तलक जिन जा।
9नाहीं तउ दूसर कउनो तोहरे ताकत क उपयोग करिहीं,
अउर तोहार जिन्नगी क बरिस कउनो अइसे मनइ लइ ले
हीं जउन कि करुर होइ।
10अइसा न होइ, तोहरे धने पइ अजनबी मउज करइँ।
तोहार मेहनत अउरन क घर भरइ। 11तोहार जिन्नगी क
अंतिम दिना मँ जब तू बिमार होब्या अउर तोहार लगे कछू
भी न होइ, तउ तोहका रोवत बिलबिलात भवा छोड़ दीन्हा
जाहीं।
12अउर तू कहब्या, "हाय! मइँ अनुसासन स काहे घिना
किहा? मइँ सुधार क काहे उपेच्छा किहा? 13मइँ आपन
सिच्छकन क बात नाहीं मानेउँ या मइँ आपन प्रसिच्छकन पइ
धियान नाहीं दिहेउँ। 14मइँ महानासे क किनारे पइ आइ गावा
हउँ अउर हर एक इ जानत ह।"

आपन पत्नी क संग आनन्द मनावा

15-16तू आपन हौज स ही पानी पिया करा अउ तू आपन झरना स ही सुद्ध पानी पिया करा। तू आपन पानी क गलियन मँ इधर-उधर फइलइ जिन दया। एका गलियन मँ नदी क नाई बह्य जिन द्या। 17इ तउ बस तोहार ही होइ, एकमात्र तोहार ही। ओनमाँ कबहुँ कउनो अजनबी क हींसा न होइ, 18आपन पत्नी क संग धन्न रहा। ओकरे संग ही तू जीवन रस क पान करा जेक तू आपन जवानी क समइ सादी कीन्ह रहा। 19ओकर छातियन हरिणी अउर खुबसुरत पहाड़ी बोकरी क नाई तोहका हमेसा सन्तुस्त करइ, ओकर पिरेम जाल तोहका हमेसा फाँस लइ 20हे मोर पूत, कउनो बिभिचारिणी क तोहका विनासे क ओर काहे लइ जावइ चाही? तोहका कउनो अजनबी मेहरारु क काहे गले लगावइ चाही?

21यहोवा तोहार राहन पूरी तरह लखत अहइ अउ उ तोहार सबहिं राहन परखत बाटइ। 22दुट्ठ क बुरे करम ओका बाँध लेत हीं। ओकर ही पाप जाल ओका फाँसि लेत ह। 23उ अनुसासन क कमी क कारण मरि जात ह। ओकर महान मूरखता ओका विनास क ओर लइ जावत ह।

कउनो चूक जिन करा

6 हे मोर पूत, जदि तू बगैर समुझबूझिके कउनो अजनबी मनइ क बदले मँ कउनो क जमानत दिहा ह या कउनो स कउनो बचन किहस ह? 2तउ तू आपन ही कहनी क जालि मँ फँसि गवा अहा, तू आपन मुँह क ही सब्दन क पिंजरे मँ बंद होइ गवा अहा। 3हे मोर पूत, काहेकि तू अउरन क हाथन क पुतला होइ गवा ह। तू आपन क रच्छा बरे अइसा ही करा जइसा मइँ कहत हउँ। ओन लोगन क निआरे जा अउ विनम्र होइके आपन पड़ोसियन स आग्रह करा। 4आपन आँखिन क आराम जिन करइ द्या। आपन आँखियन क पलक झपकी तलक न लइ द्या। 5खुद क हरिणी क नाईं या सिकारी क हाथे स भागा भवा कउनो पंछी क नाईं आजाद कइ ल्या।

आलसी जिन बना

6अरे ओ आलसी, चोंटी क लगे जा। ओकर कार्य विधि लखा अउर ओहसे सीख ल्या। 7ओकर न तउ कउनो नायक अहइ, न ही कउनो निरीच्छक, न ही कउनो सासक अहइ। 8फुन भी उ गरमी मँ खइया क बटोरत ह अउ कटनी क समइ अन्न क दाना बटोरत ह।

9अरे ओ सुस्त मनइ, कब तलक तू हिआँ पड़ा रहब्या? आपन नींद स तू कब जाग उठब्या? 10तू तनिक सोब्या, तनिक झपकी लेब्या, तनिक सुस्ताइ बरे आपन हाथन पइ हाथ धइ लेब्या 11अउर बस तोहका गरीबी लुटेरा क नाईं आइके घेरी अउर अभाव तोहका हतयार स लैस डाकोअन क नाई घेर लेइ।

दुट्ठ जन

12नीच अउ दुट्ठ मनइ उ होत ह जउन धोका दइवाले बातन बोलत भवा फिरत रहत ह। 13जउन आँख माराइ क इसारा करत ह अउर आपन अँगुरियन अउर पैरन स संकेत देत ह। 14उ सडयंत्र रचत ह अउर हमेसा बहस व मुबाहिसा करत ह। 15एह बरे ओह पइ एकाएक महानास गिरी अउर फउरन नस्ट होइ जाइ। ओकरे लगे बनइ क उपाय नाहीं होइ।

उ सात बातन जेनसे यहोवा घिना करत ह

16यहोवा छ: चिजियन स घिना करत ह, अउर सातवें चीज ओकर बरे घृणित अहइ।

17गर्व स भरी आँखिन, झूठ स भरी वाणी, उ सबइ
हाथन जउन निर्दोख लोगन क हतियारा अहइँ।
18अइसा हिरदय जउन सडयंत्र रचत रहत ह, उ सबइ
गोड़ जउन बुराइ क मारग पइ तुरन्त दउड़ पड़त हीं।
19उ लबार गवाह, जउन लगातार झूठ उगलत ह
अउर अइसा मनई जउन भाइयन क बीच फूट डावइ।

दुराचार क खिलाफ चिताउनी

20हे मोर पूत, आपन बाप क आग्या क माना अउर आपन महतारी क सिच्छा क कबहूँ जिन तजा। 21आपन हिरदय पइ ओनका हमेसा ही बाँधे रहा अउर ओनका आपन गटइया क हार बनाइ ल्या। 22जब तू अगवा बढ़ब्या, उ पचे राह देखइहीं। जब तू सोइ जाब्या, उ पचे तोहार रखवारी करिहीं अउर जब तू जागब्या, उ पचे तोहसे बातन करिहीं।

23काहेकि आदेस दीपक क नाई अहइँ अउर सिच्छा एक जोति क नाई हइ। अनुसासन क डाँट फटकार तउ जिन्नगी क मारग अहइ। 24उ सबइ तोहका चरित्रहीन मेहरारू स अउर बिभिचारणी क फुसलाहट स रच्छा करत हीं। 25तू आपन मन क ओकर सुन्नर क चाह जिन करइ द्या अउर ओकर आँखिन क जादू क सिकार जिन बना। 26काहेकि उ रण्डी तउ तोहका रोटी-रोटी क मोहताज कइ देइ। मुला उ कुलटा तउ तोहार जिन्नगी हर लेइ।

27का इ होइ सकत ह कि कउनो केउ क गोदी मँ आगी रखि देइ अउर ओकर ओढ़ना फुन भी तनिकउ भी न जरइ? 28दहकत भए कोएले क अंगारन पइ का कउनो मनई अपन गोड़वन क बगैर झुरसाए भए चल सकत ह? 29उ मनई अइसा ही अहइ जउन कउनो दूसर क पत्नी स समागम करत ह। अइसी पइ मेहरारू क जउन भी कउनो छुइ, उ बगैर दण्ड पाए नाहीं रहि पाइ।

30-31अगर कउनो चोर कबहुँ भूखन मरत होइ, अउर उ भूख मिटावइ बरे चोरी करइ तउ लोग ओहसे घिना नाहीं करिहीं। फुन भी अगर उ धरा जाइ तउ ओका सात गुना भरइ पड़त ह चाहे ओहसे ओकरे घरे क समूचा धन चुक जाइ।

32मुला एक मनइ जउन दूसर क पत्नी क संग सारीरिक सम्बंध करत ह तउ ओकरे लगे विवेक क कमी अहइ। जउन मनइ अइसा करत ह उ खुद बरे विनास लावत ह। 33प्रहार अउ अपमान ओकर भाग्य अहइ। ओकर कलंक कबहुँ नहीं धोइ जाइ। 34काहेकि पति क ईर्स्या किरोध जगावत ह अउर जब उ एकर बदला लेइ तब उ ओह पइ दाया नाही करी। 35उ कउनो नोस्कान क पूर्ति अंगीकार नाही

करी अउर कउनो ओका केतना ही बड़ा लालच देइ, ओका
उ अंगीकार किए बगैर ठुकराइ।

विवेक दुराचार स बचावत ह

7 हे मोर पूत, मोरे वचनन क पाला अउ अपने मने मँ
मोर आदेस संचित करा। 2जदि तू मोरे आदेसन क
मानब्या तउ तू जियबा। तोहका मोहरे उपदेसन क आपन
आँखी क पुतरी सरीखा सँभारिके राखइ चाही।

3ओनका आपन अँगुरियन पइ बाँधि ल्या, तू आपन हिरदय
पटल पइ ओनका लिख ल्या। 4बुद्धि स कहा, "तू मोर
बहिन अहा" अउर तू समुझबूझिके आपन कुटुम्बी जन कहा।
5उ सबइ हि तोहका बदकार मेहरारु क चिकनी व लुभावन
बातन स बचाई।

6एक दिना मइँ अपन खिड़की क झरोखा स झाँकिउँ,
7सरल नउजवानन क बीच एक अइसा नउजवान लखेउँ जेका
नीक-बुरा क पहिचान नाहीं रहा। 8उ उहइ गली स होइके
उहइ बदकार मेहरारु क नुक्कड़ क लगे स जात रहा। उ
ओकरे ही घरवा कइँती बढ़त जात रहा। 9सूरज साँझ क
धुँधल मँ बूड़त रहा, राति क अँधियारा क तहन जमत जात
रहिन। 10तबहिं एक मेहरारु ओहसे मिलइ बरे निकरिके
बाहेर आइ। उ रण्डी क भेस मँ सजीभइ रही। अउर ओकरी
इरादा बहोत प्रबल रही। 11उ वाचाल अउर ओकर प्रबल
इरादे क रही। उ घरे मँ कबहुँ ठहिरइ नाहीं चाहेस। 12उ
कबहुँ-कबहुँ गलियन मँ, कबहुँ चउराहन पइ, अउर हर केउ
क नोक्कड़े पइ घात लगावत रही। 13उ ओका रोक लिहस
अउ ओका धरेस। उ ओका निर्लज्ज मुँहे स चूमेस, फुन
ओहसे बोली, 14"आजु मोका मेलबलि अर्पण किहा। मइँ
आपन प्रतिग्या परमेस्सर बरे पूरी कइ लिहेउँ। 15एह बरे मइँ
तोहसे मिलइ अउर तोहका यह कहे बरे बाहेर आएहउँ कि
आ अउर मोर दावत मँ सामिल होजा। मइँ तोहार तलास मँ
रही अउर अंत मँ तोहका पाए लिहेउँ। 16मइँ मिस्र क
मलमले क रंगन स भरी भइ चादर स सेज सजाएउँ ह।
17मइँ आपन सेज क गंधरस, दालचीनी अउर अगर गंध स
सुगंधित किहेउँ ह। 18तू मोरे लगे आवा। भोर क किरण
तलक दाखरस पिअत रही, हम आपुस मँ भोग करत रही।
19मोर पति घरे पइ नाहीं अहइँ। उ दूर जात्रा पइ गवा अहइ।
20उ आपन थैली रूपाया स भरिके लइ गवा अहइ अउर
पुन्नवासी तलक घरे पइ नाहीं होइ।"

21उ ओका लुभावना सब्दन स मोह लिहस। ओका मीठ
मधुरवाणी स फुसलाइ लिहस। 22उ फउरन ओकरे पाछे
अइसे होइ लिहस जइसे कउनो बर्धा क जबह करइ बरे ले
जाया जात ह। उ अइस चलत ह जइसे कउनो मूरख जालि
मँ गोड़ धरत होइ। 23जब तलक एक तीर ओकर हिरदय
नाहीं बेधी तब तलक उ पंछी सा जालि पइ बगैर इ जाने टूट
पड़ी कि जालि ओकर प्राण हरि लेइ।

24तउ मोरे पूतो, अब मोर बात सुना अउर जउन कछू मइँ
कहत हउँ ओह पइ धियान द्या। 25आपन मन कुलटा क
राहन मँ जिन हींचइ द्या अउर ओका ओकरे राहन पइ जिन
भटकइ द्या। 26केतने ही सिकार उ मार गिराएन ह। उ
जेनका मारेस ओनकर जमघट बहोत बड़ा बाटइ। 27ओकर
घर उ राजमार्ग अहइ जउन कब्र क जात ह अउर तरखाले
मउते क कालकोठरी मँ उतरत ह।

सुबुद्धि क पुकार

8 का बुद्धि तोहका गोहरावत नाहीं अहइ? का समुझबूझ
ऊँचकी अवाज स तोहका नाहीं बुलावत अहइ?

2उ राह क किनारे ऊँचे ठउरन पइ अउर चौराहे पइ खड़ी
रहत ह।

3उ सहर क जाइवालो दुआरन क सहारे सिंह दुआर क
ऊपर गोहराइके कहत ह,

4"हे लोगो, मइँ तोहका गोहरावत हउँ, मइ समूची
मानवजाति बरे अवाज अठावत हउँ।

5अरे नादा लोगो! बुद्धिमानी स रहइ क सिखा तू जउन
मूरख बना अहा समुझबूझ सिखा।

6सुना। काहेकि मोरे लगे कहइ क उत्तिम बातन अहइँ,
आपन मुँहन खोलति हउँ, जउन कहइ क उचित बा

7मेरे मुखे स तउ उहइ निकरत ह जउन फुरइ अहइ,
काहेकि मोरे ओंठन क दुट्ठता स घिन अहइ।

8मोरे मुँहे स नकलइ वाले सबइ सब्द निआव स पूर्ण
अहइ। ओन मँ स कउनो भी धोका देइ वाला नाहीं अहइ।

9विचारवान मनई बरे उ सबइ साफ साफ अहइँ अउर
गियानी जन बरे उ सबइ सब दोख रहित अहइँ।

10चाँदी नाहीं बल्कि तू मोर हिदायत ग्रहण करा उत्तिम
सोना नाहीं बल्कि तू मोर गियान ल्या।

11सुबुद्धि रत्नन मणि माणिकन स जियादा कीमती अहइँ।
तोहार अइसी मनचाही कउनो वस्तु स ओकर तुलना नाहीं
होइ।"

सुबुद्धि का करत ह

12"मइँ बुद्धि अउर गियान क संग रहत हउँ। नीक
अउर विवेक मोर मीत अहइ।।

13यहोवा स डरब, बुराई स घिना करब अहइ। स्वार्थीपन
अउर घमण्ड, बुराइ क मारग झुठी मुँह स मइँ घिना करत
हउँ।

14मोर लगे परामर्स अउ गियान अहइ। मोरे लगे बुद्धि
सक्ती अहइ।

15मोरे ही सहारे राजा राज्ज करत हीं, अउर सासक नेम
रचत हीं, जउन निआउ स पूर्ण अहइ।

16केवल मोरी ही मदद स धरती क सबइ नीक सासक
राज्ज चलावत हीं।

17जउन मोहसे पिरेम करत हीं, मइँ भी ओनसे पिरेम
करत हउँ, मोका जउन हेरत हीं, मोका पाइ लेत हीं।

18सम्पत्तियन अउ आदर मोर संग अहइँ। मइँ खरी
सम्पत्ति अउ जस देत हउँ।

19मोर फल सोना स उत्तिम अहइँ। मइँ जउन उपजावत
हउँ, उ सुद्ध-चाँदी स जियादा नीक अहइ।

20मइँ निआउ क मारग क संग संग सत्य क मारग पइ
चलत आवत हउँ।

21मोहसे जउन पिरेम करतेन ओनका मइँ धन देत हउँ,
अउर ओनकर भंडार भरि देत हउँ।

22यहोवा सबइ चिजियन क रचइ स पहिले आपन पुराने करमन स भी पहिले मोका रचेस ह।

23मोर रचना सनातन काल मँ भइ रहा। धरती क रचान स पहिले मोर रचान भइ रहा।

24जब मोरे रचना कीन्हा गवा रहा तब न तउ सागर रहा अउर न ही पानी क सोता रहेन।

25मोका पहाड़न पहाड़ियन क थिर करइ स पहिले ही जन्म दीन्ह गवा।

26धरती क रचना, या ओकर खेत या जब धरती क, धूल कण रचा गएन। ओसे पहिले मोका रचेस ह।

27जब यहोवा अकासे क कायम किहे रहा ओहसे भी पहिले मोर अस्तित्व रहा। जब यहोवा सागार क पइ छितिज रेखा खिँचे रहा ओहसे भी पहिले मोर अस्तित्व रहा।

28उ जब अकासे मँ सघन बादल टिकाए रहा, अउर गहिर सागर क पानी स भरे रहा तउ स भी मइँ हुवाँ रहा।

29जब उ समुद्दर क चउहद्दी बाँधे रहा ताकि पानी ओहसे आगे न चला जाइ मइँ हुवाँ रहा। जब उ धरती क नेंवन रखे रहा ओहेस पहिले मइँ राह।

30तब मइँ ओकरे संग कुसल सिल्पी स रहेउँ, मइँ दिन-प्रतिदिन आनन्द स पूरिपूर्ण होत चली गएउँ। ओकर समन्वा हमेसा आनन्द मनावत।

31ओकर पूरी दुनिया स मइँ आनन्दित रहेउँ। मोर खुसी समूचइ मानवता रही।

32तउ अब, मोर पूतो, मोर बात सुना। ओ धन्न अहइ जउन जन मोर राह पइ चलत हीं।

33मोर उपदेस सुना अउर बुद्धिमान बना। एनकर उपेच्छा जिन करा।

34उहइ जन धन्न अहइ, जउन मोर बात सुनत अउर रोज मोरे दुआरन पइ दृस्टि लगाए रहत एवं मोर ड्योढ़ी पइ बाट जोहत रहत ह।

35काहेकि जउन मोका पाइ लेत उहइ जिन्नगी पावत अउर उ यहोवा क अनुग्रह पावत ह।

36मुला उ जउन मोर खिलाफ पाप करत ह खूद ही चोट खावत ह उ जउन मोहे स घिना करत ह उ मउत स गले लगावत ह।"

सुबुद्धि अउर दुर्बुद्धि

9 बुद्धि आपन घर बनाएस ह। उ आपन सात खम्भन* गढ़ेन ह। 2उ आपन खइया क तइयार किहस अउर मिलावा भवा दाखरस आपन खइया क खाइ क मेजे पइ सजाइ लिहस ह। 3अउर आपन दासियन क सहर क सबन त ऊँचके जगहिया स बोलावइ क पठएस ह। 4"जउन भी नादान अहइ, किरपा कइ क हिआँ पइ आइ।" जउन मनइ क समुझ नाहीं अहइ उ ओनसे कहत ह, 5"आवइँ, मोर खइया क खाइँ, अउर मोर दाखरस पिअइँ जेका मइँ बनाएस हउँ। 6तू पचे आपन नादानी तजि द्या तउ तू जिअब्या। समुझ-बूझिके मारग पइ सिधे आगे बढ़ा।"

7जउन कउनो मसखरी करइवाले क सुधार देत ह उ अपमाने क बोलावत ह, अउर जउन कउनो दुठ्ट मनइ क डाँट फटकार करइ चोट खात ह। 8मसखरी करइवाले वाले क कबहुँ भी जिन डाँटा-फटकारा, नाहीं तउ उ पचे तू पचन स ही घिना करइ लागी। मुला अगर तू कउनो विवेकी क डाँटा-टफकारा तउ उ तू पचन स पिरेम ही करी। 9बुद्धिमान व्यक्ति क चेतावा, उ अउर जियादा बुद्धिमान होइ। कउनो नीक व्यक्ति क क सिखावा, उ आपन गियन क बृद्धि करी।

10यहोवा स डर, बुद्धि क हासिल करब क पहिला कदम बाटइ। यहोवा क गियान, समझबूझ क हासिल क पहिला कदम अहइ। 11काहेकि मोर जरिये ही तोहार उमिर बढ़ी, तोहार दिन बढ़िहीं, अउर तोहरी जिन्नगी मँ बरिस जुड़त ही जइहीं। 12"अगर तू बुद्धिमान अहा, सुदबुद्धि तोहका प्रतिफल देइ। अगर तू मसखरी करइवाले अहा, तउ तू अकेल्ले कस्ट झेलब्या।

13मूरखता अइसी मेहरारू क नाई अहइ जउन बातन बनावत ह किन्तु कछू नाहीं जानत ह। ओनके लगे गियान नाहीं अहइ। 14आपन घरे क दुआरे पइ उ बइठी रहत ही, सहर क सर्वोच्च बिंदु पइ उ आसन जमावत ह। 15उ हर एक क जउन ओकर ओर निगाह भी नाहीं करत हीं, पुकारती ह, 16"अरे नादान लोगो तू पचे भितरे चले आवा!" उ इ ओनसे कहत ह जेनके लगे सुझ-बूझ क कमी अहइ। 17"चोरी क पानी तउ मीठ-मीठ होत ह, छुपके खइया क खावा गवा भोजन, बहोतइ सुआद देत ह।"

18मुला उ पचे इ नाही जानतेन कि हुआँ मृतकन क बास होत ह अउर उ सबइ जेका उ पहिले निओता दिहस रहा अब कब्र मँ अहइँ।

सुलेमान क कहावत

10 इ सबइ सुलैमान क नीतिवचन (कहावतन) अहइ। एक बुद्धिमान पूत अपने बाप क आनन्द देत ह। मुला एकठु मूरख पूत, महतारी क दुःख देत ह।

2बुराई स कमाए भए धन क खजाना हमेसा बियर्थ रहत हीं। जबकि धार्मिकता मउत स छोड़ावत ह। सत्य क मारग हम लगन क मउत स बचावत ह।

3यहोवा कउनो भी नेक व्यक्ति क भूखा नाहीं रहइ देत ह। मुला दुट्ठ क लालसा पइ पानी फेरि देत ह।

4सुस्त हाथ मनई क दरिद्र कइ देत ह, मुला मेहनती हाथ सम्पत्ति लिआवत हीं।

5ग्रीस्मकाल मँ जउन उपज क बटोरके राखत ह, उहइ पूत बुद्धिमान अहइ; किन्तु जउन कटनी क समइ मँ सोवत ह उ पूत सर्मनाक होत ह।

6नीक लोगन क मूँड़ पइ आसीसन क मुकुट होत ह मुला दुठ्ठ क मुँह हिंसा स भरा होत ह।

7नीक लोगन क यादगर आसीस होत ह, मुला दुट्ठ लोगन क नाउँ मिट जाहीं।

8उ आग्या मानी जेकर मन विवेकसील अहइ, जबकि बक्वास मूरख नस्ट होइ जाइ।

9विवेकवाला मनई सुरच्छित रहत ह, मुला टेंढ़ी चाल चलइवाले क भण्डा फूटी।

सात खम्भन प्राचीन इस्राएल मँ बहोत सारे घरन मँ चार कमरा होत रहेन जेहमा सात खम्भन छत क सहरा देइ बरे होत रहेन। इ इ दिखावत ह कि बुद्धि क लगे नीक अउर गेस घर होत रहेन।

10जउन बुरे इरादे स आँखी क इसारा करइ, तउ ओका
ओहसे दुःख ही मिली। अउर बकवासी मूरख नस्ट होइ
जाइ।
11धर्मी व्यक्ति क मुँह तउ जिन्नगी क सोता अहइ, मुला
दुट्ठ व्यक्ति क मुँहे हिंसा स भरा पड़त ह।
12घिना वाद-विवाद क कारण अहइ। जबकि पिरेम सबइ
अपराध क ढाँपि लेत ह।
13बुद्धि क निवास हमेसा समुझदार ओंठन पइ होत ह,
मुला जेनमाँ नीक बुरा क बोध नाहीं होत, ओकरे पिठिया पइ
डंडा होत ह।
14बुद्धिमान लोग, गियान क संचित करत रहेन, भुला
मूरख क बाणी विपत्ति क बोलावत ह।
15धनिक क धन, ओनकर मजबूत किला होत, दीन क
दीनता पइ ओकर बिनास अहइ।
16धर्मी मनइ क कमाई ओनका जिन्नगी प्रदान करत ह।
मुला दुट्ठ मनइ आपन पाप बरे कीमत चुकावत ह।
17उ जउन अनुसासन स सीखत ह उ दूसर क जिन्नगी
क मारग बरे निर्देस दे सकत ह। मुला उ जउन हिदायत क
उपेच्छा करत ह अइसा मनई दूसर क भटकावा करत ह।
18जउन मनई बैर पइ परदा डाए राखत ह, उ मिथ्यवादी
अहइ अउर उ जउन निन्दा फइलावत ह, मूरख अहइ।
19जियादा बोलइ स, कबहुँ पाप दूर नाहीं होत मुला जउन
आपन जवान क लगाम देता ह, उहइ बुद्धिमान अहइ।
20धर्मी क वाणी विसुद्ध चाँदी अहइ, मुला दुट्ठ क
हिरदय क कउनो मोल नाहीं।
21धर्मी जन क बातन चाँदी क नाई होत ह। मुला दुट्ठ
मनइ क सुझाव क कउनो कीमत नाहीं होत ह।
22यहोवा क वरदान स जउन धन मिलत ह, ओकरे संग
उ कउनो दुःख नाही जोड़त।
23बुरे आचार मँ मूरख क सुख मिलत ह, मुला एक
समुझदार विवेक मँ सुख लेत ह।
24जेहसे मूरख भयभीत होत ह ओका उहइ क कस्ट
झेलइ क होइ। किन्तु एक धर्मी मनइ आपन इच्छा स
आसिसित कीन्ह जाइ।
25आँधी जब गुजरत ह, दुट्ठ उड़ जात हीं, मुला धर्मी
लोग तउ सदा ही बिना हिले डुले खड़ा रहत हीं।
26काम पइ जउन कउनो आलसी क पठवत ह, उ बन
जात ह जइसे अम्ल सिरका दाँत क खटावत ह, अउर धुआँ
आँखिन क तड़पावत दुःख देत ह।
27यहोवा क भय उमिर बढ़ावत ह। मुला एक दुट्ठ मनई
क उमिर तउ घट जात ह।
28धर्मी क भविस्स आनन्द-उल्लास अहइ। मुला दुट्ठ क
आसा तउ बियर्थ रहि जात ह।
29इमानदार लोगन बरे यहोवा क मारग सरणस्थल अहइ;
मुला जउन बुरा जन अहइँ, ओनकर इ बिनास अहइ।
30धर्मी जन क कबहुँ उखाड़ा न जाइ, मुला दुट्ठ धरती
पइ कबहुँ टिक नाहीं पाइ। 31धर्मी क मुँहे स बुद्धि क धार
बहत ह, मुला कुटिल जीभ क तउ काटिके लोकावा जाइ।
32धर्मी क ओंठ जउन उचित अहइ जानत ही, मुला दुट्ठ
क मुँह बस कुटिल बातन बोलन ह।

11 यहोवा छले क तराजू स घिना करत ह, मुला ओकर
आंनद सही नाप-तौल पइ अहइ।
2अभिमान क संग अपमान आवत ह, मुला नम्रता क संग
विवेक आवत ह।
3इमानदार लोगन क नेकी ओनकर अगुवाई करत ह,
मुला बिस्सासघाती क कपट ओनका विनास करत ह।
4जब परमेस्सर लोगन क परखत ह तउ धन बियर्थ रहत
ह। इ काम नाहीं आवत ह। मुला तब नेकी लोगन क मउत
स बचावत ह।
5नेकी निर्दोख जन बरे मारग सरल सोझ बनावत ह, मुला
दुट्ठ जन क ओकर आपन ही दुट्ठई धूरि चटाइ देत ह।
6नेकी सज्जन लोगन क छोड़ावत ह। मुला धोकाबाज
आपन ही बुरे जोजना जालि क मँ फँस जात ह।
7जब दुट्ठ मरत ह तउ ओकर बरे कउनो आसा नाही
रहत ह। बुरे मनइ क आसा बियर्थ होइ जाइ।
8धर्मी जन तउ बिपत्ति स छुटकारा पाइ लेत ह, जबकि
ओकरे बदले उ दुट्ठ पइ आइ पड़त ह।
9बुरे लोगन क वाणी आपन पड़ोसी क लइ बूड़त ह।
मुला गियान क जरिये धर्मी जन तउ बचि निकरत ह।
10धर्मी क विकास सहर क आनन्द स भरि देत ह।
जबकि दुट्ठ क नास हर्सनाद उपजावत।
11सच्चे जने क आसीस तउ सहर क ऊँच उठाइ देत ह
मुला दुट्ठ क बातन खाले गिराइ देत हीं।
12अइसा मनई जेकरे लगे विवेक नाहीं होत, उ आपन
पड़ोसी क अपमान करत ह, मुला समुझदार मनई चुपचाप
रहत ह।
13जउन अफवाह फैलावत ह उ भेद परगट करत ह,
किन्तु बिस्सासी जन भेद क छुपावत ह।
14जहाँ मारग दर्सन नाहीं, हुआँ रास्ट्र पतित होत ह, मुला
बहुत सलाहकार जीत क सुनिस्चित करत हीं।
15जउन अनजाने मनइयन क जामिन बनत ह, उ निहचइ
ही पीड़ा उठाइ। मुला जउन जामिन बनावइ स बचत ह उ
आपन आप क सुरच्छा करत ह।
16दयालु मेहरारू तउ आदर पावत ह जबकि क्रूर मनई क
लाभ सिरिफ धन अहइ।
17दयालु मनई खुद आपन भला करत ह, जबकि निर्दयी
मनई खुद पइ विपत्ति लिआवत ह।
18दुट्ठ जन कपट भरी कमाई कमाता ह, मुला जउन
नेकी क बोवत ह, ओका तउ सच्चा प्रतिफले क पाउब
अहइ।
19उ जउन धार्मिकता मँ मजबूत अहइ लम्बी उमिर पावत
ह। किन्तु जउन बुराई क अनुसरण करत ह कुसमइ मरि
जात ह।
20कुटिल जनन स, यहोवा घिना करत ह मुला उ ओनसे
खुस होत ह जेनका जिन्नगी स्वच्छ होत हीं।
21इ जाना निहचित अहइ कि दुट्ठ जन कबहुँ सजा स
नाहीं बचिहीं। किन्तु धर्मी जन अउर ओनकर गदेलन सजा स
बचिहीं। 22जउन नीक बुरा मँ फरक नाहीं करत, उ मेहरारू
क सुन्नरता अइसी अहइ जइसे कउनो सुअरे क थूथुन मँ
सोना क नथुनी।

23धर्मी मनई क अभिलासा क भलाई मँ अंत होत ह।
मुला दुट्ठ क आसा सिरिफ किरोध मँ अंत होत ह।
24जउन उदार अजाद भाव स दान देत ह, उन्नती करिहीं।
मुल उ जउन ओन चिजियन क आपन लगे रखत ह जेका
देइ चाही, ओकर लगे उ नाही होइ जेन्का जरुरत ओका
अहइ।
25उदार जन तउ हमेसा, फूली फली अउर जउन दूसरन
क पिआस बुझाइ, ओकर तउ पिआस अपने आप ही बुझी।
26अन्न क जमाखोर लोगन क गारी खात हीं, मुला जउन
ओका बेचइ क राजी होत ह ओकरे मूँड़ बरदान क मकुट
स सजत ह।
27जउन भलाई पावइ क जतन करत ह उहइ जस पावत
ह; मुला जउन बुराई क पाछे पड़ा रहत ओकरे तउ हथवा
बुराई ही लागत ह।
28जउन कउनो आपन धने क भरोसा करत ह, झरि जाइ
उ बेजीव झुरान पाते जइसा; मुला धर्मी जन नवी हरियर
कोंपर स हरा-भरा ही रही।
29जउने आपन घराने पइ अपमान लिआइ ओका कछू भी
नाही मिली। एक मूरख, बुद्धिमान क दास बनिके रही।
30धर्मी मनई क करम-फल “जिन्नगी क बृच्छ” अहइ,
अउर जउन जन आतिमान क जीत लेत ह, उहइ बुद्धिमान
अहइ।
31अगर इ धरती पइ धर्मी जन आपन उचित प्रतिफल
पावत हीं, तउ फुन पापी अउ दुट्ठ जन आपन कुकरमन क
केँतना फल हिआँ पइहीं।

12 जउन अनुसासन स पिरेम करत ह, उ तउ गियान स
भी पिरेम करत ह। किन्तु जउन सुधार स घिना करत
ह तउ उ निरा मूरख अहइ। 2सज्जन मनई यहोवा क
किरपा पावत ह, मुला छल छछंदी क यहोवा सजा देत ह।
3दुट्ठता, कउनो जने क थिर नाही कइ सकत किन्तु धर्मी
जन कबहुँ उखड़ नाही पावत ह।
4एक उत्तिम पत्नी क संग पति खुस अउर अभिमानी होत
ह। किंतु उ पत्नी जउन आपन मनसेधू क लजावत ह उ
ओका तने क बेरामी जइसे होत ह।
5धर्मी मनई क सबइ जोजना निआव स पूर्ण होत हीं
जबकि दुट्ठ क सलाह कपट स भरी होत हीं।
6दुट्ठ क सब्द लोगन क मारइ बरे घात मँ रहत हीं।
मुला सज्जन क मुहँ ओनका बचावत ह।
7जउन खोट होत हीं उखाड़ फेंका जात हीं, मुला धर्मी
मनई क घराना टिका रहत ह।
8मनई आपन अच्छा बातन जउन उ बोलत ह क
मुताबिक तारीफ पावत ह। मुला उ जउन मुरख अहइ ओका
तुच्छ जाना जात ह।
9सामान्य मनई बनिके मेहनत करब उत्तिम अहइ एकरे
कि भूखा रहिके महत्वपूर्ण मनई स सुआँग भरब।
10धर्मी मनई आपन जानाबरन तलक क धियान रखत ह;
किन्तु दुट्ठ मनइ सदा ही जालिम होत ह।
11जउन अपने खेते मँ काम करत ह ओकरे लगे खाइके
इफरात होइ। मुला जउन बियर्थ बिचारन क पाछा करत ह
ओकरे लगे विवेक क अभाव रहत ह।
12दुट्ठ जन बुरे जोजना क इच्छा करत ह। मुला धर्मी
जन क जड़ फल लावत ह।
13पापी मनई क ओकर आपन ही सब्द ओका जाल मँ
फँसाइ लेत ह। किंतु खरा मनई बिपत्ति स बच निकरत ह।
14आपन अच्छी बातन स जउन उ कहत ह मनइ अच्छा
प्रतिफल पावत ह। इहइ तरह स एक मनइ आपन कार्य क
अनुसार लाभ पावत ह।
15मूरख क आपन मारग ठीक जान पड़त ह, मुला
बुद्धिमान मनई सम्मति सुनत ह।
16मूरख जन आपन झुँझलाहट झटपट देखावत ह मुला
बुद्धिमान अपमान क उपेच्छा करत ह।
17फुरइ स पूर्ण गवाह खरी गवाही देत ह, मुला लबार
साच्छी झूठी बातन बनावत ह।
18बिन बिचारे वाणी तरवार स छेदत, मुला विवेकी क
वाणी घावन क भरत ह।
19फुरइ स भरी वाणी हमेसा हमेसा टिकी रहत ह, मुला
झूठी जीभ बस छिन भर क टिकत ह।
20ओनके मने मँ छल-कपट भरा रहत ह, जउन कुचक्रे
स भरी जोजना रचत हीं। मुला जउन सान्ति क बढ़ावा देत
हीं, आनन्द पावत हीं।
21धर्मी जने पइ कबहुँ विपत्ति नाही पड़ी, मुला दुट्ठन क
तउ विपत्तियन घेरिहीं।
22अइसे ओंठन क यहोवा घिना करत ह जउन झूठ
बोलत हीं; मुला ओन लोगन स जउन सच स पूर्ण अहइँ,
उ खुस रहत ह।
23गियानी जियादा बोलत नाही ह, चुप रहत ह मुला मूरख
जियादा बोलिके आपन अगियानी क देखावत ह।
24मेहनती हाथ तउ सासन करिहीं, मुला आलस क
परिणाम बेगार होइ।
25चिंता स भरा मन मनई क दबोच लेत ह। किंतु सुभ
समाचार ओका हर्स स भरि देत ही।
26धर्मी मनई आपन पड़ोसी क मार्गदर्सन करत ह। मुला
दुट्ठन क चाल ओनहीं क भटकावत ह।
27आलसी मनई आपन आलस क कारण आपन काम
पूरा नाही कर सकत ह। मुला एक मेहनती मनइ आपन
सखत मेहनत स धन दोलत पावत ह।
28नेकी क मारग मँ जिन्नगी रहत ह, अउर उ राहे क
किनारे अमरता बसत ह।

13 समुझदार पूत आपन बाप क सिच्छा पइ कान देत
ह। मुला बिद्रोह पूत झिड़की पइ भी धियान नाही देत
ह। 2सज्जन आपन वाणी क सुफल क आनंद लेत हीं मुला
दुर्जन तउ सदा हिंसा चाहत ह।
3जउन आपन वाणी क बरे चौकस रहत ह, उ आपन
जिन्नगी क रच्छा करत ह। पर जउन गाल बजावत रहत ह,
आपन बिनास क पावत ह।
4आलसी मनइ चिजियन क लालसा करत ह पर कछू
नाहीं पावत, मुला एक ठू परिस्त्रमी क जेतनी भी इच्छी
अहइ, पूर्ण होइ जात ह।
5धर्मी मनई ओहसे घिना करत ह, जउन झूठ अहइ
जबकि दुट्ठ लज्जा अउ अपमान लिआवत हीं।

6सच्चरित्र मनई क रच्छा करइवाली नेकी अहइ; जबकि
दुट्ठता पापी मनइयन क नास करत ह।
7एक ठु मनई जउन धन क देखावा करत ह, किंतु
ओकरे लगे कछु भी नाहीं होत ह। किन्तु एक दूसर जउन
गरीबी क जिन्नगी गुजारत ह ओकरे लगे बहोत धन होत
ह। 8धनवान क आपन जिन्नगी बचावइ ओकर धन फिरौती
मँ लगावइ पड़ी मुला दीन जन कउनो धमकी क भय स
अजाद अहइ।
9धर्मी मनई क जिन्नगी प्रकास क नाईं चमचमात ह।
किंतु दुट्ठ मनई क दिया बुझाइ दीन्ह जात ह।
10अहंकार सिरिफ झगड़न क पनपावत ह। मुला विवेक
उ अहइ जउन दूसर क राय क मानत ह।
11बेइमानी क धन यूँ ही धूरि होइ जाता ह मुला जउन
परिस्रम कइके धन संचित करत ह, ओकर धन बाढ़त ह।
12जदि कउनो आसा नाही होइ तउ मन उदास होइ जात
ह, मुला कामना क पूर्ति खुसी देत ह।
13जउन जन सिच्छा क निरादर करत ह, ओका एकर
कीमत चुकावइ क पड़ी। मुला जउन सिच्छा क आदर करत
ह, उ तउ एकर प्रतिफल पावत ह।
14विवेक क सिच्छा जिन्नगी क उद्गम सोता बाटइ, उ
लोगन क मउत क फंदे स बचावत ह।
15उ जउन अच्छा समुझ बूझ रखत ह खियाती अर्जित
करत ह, पर विस्सासघात सिरफ विस्साघात ही लावत ह।
16हर एक विवेकी गियान क साथ काम करत ह, मुला
एक मूरख आपन बेवकूफी परगट करत ह।
17दुट्ठ सन्देसवाहक बिपत्ति मँ पड़त ह, मुला बिस्सास क
जोग्ग दूत संाति देत ह।
18अइसा मनई जउन सिच्छा क उपेच्छा करत ह, ओह
पइ लज्जा अउ गरीबी आइ पड़त ह। मुला जउन डाँट
फटकार पइ कान देत ह, उ महत्व वाला मनइ होइ जाइ।
19कउनो इच्छा क पूर होइ जाब मने क मधुर लागत ह।
किन्तु मूरखन क बुरा क तजब नाहीं भावत ह।
20बुद्धिमान क संगति, मनई क बुद्धिमान बनावत ह।
किंतु मूरखन क साथी नस्ट होइ जात ह।
21दुर्भाग्य पापियन क पाछा करत रहत ह; किंतु धर्मियन
प्रतिफले मँ खुसहाली पावत हीं।
22सज्जन आपन नाती-पोतन क धन सम्पत्ति छोड़तह
जबकि पापी क धन धर्मियन क खातिर संचित होत रहत ह।
23दीन जन क खेत भरपूर फसल देत ह, मुला अनिआव
ओका बुहार लइ जात ह।
24जउन आपन पूते क कबहुँ नाहीं दण्डित करत, उ
आपन पूत क दुसमन अहइ। मुला जउन आपन पूत स पिरेम
करत ह तउ उ ओका अनुसासन मँ राखत ह।
25धर्मी जन, मने स खात अउर पूरी तरह तृप्त होत हीं
किन्तु दुट्ठ क पास प्रयाप्त भोजन नाही होत ह।
14 बुद्धिमान मेहरारू आपन घर बनावत ह; मुला
मूरख मेहरारू आपन ही हाथन स आपन घर उजाड़
देत ह। 2उ लोग जउन सच्ची राह पइ चलत ह आदर क
संग उ यहोवा स डेरात ह। मुला ओकर जेका राह टेढ़ी
अहइ उ यहोवा स घिना करत ह।
3मूरख क बातन ओकरे बरे मुसीबत लावत ह। किंतु
बुद्धिमानन क वाणी ओकर रच्छा करत ह।
4जहाँ बर्धा नाही होतेन, खरिहान खाली रहत हीं, बर्धा क
बल पइ ही भरपूर फसल होत ह।
5एक सच्चा साच्छी कबहुँ नाहीं छलत ह मुला झूठा
गवाह, झूठ उगलत रहत ह।
6एक अनुसासनहीन मनइ बुद्धि तलास करत ह किन्तु
एका नाहीं पावत ह। मुला जउन सिखइ क इच्छा करत ह
आसानी स गियान पावत ह।
7मूरख क संगत स दूरी बनाए राखा, काहेकि ओकरी
वाणी मँ तू गियान नाहीं पउब्या।
8गियानी जनन क गियान इहइ मँ अहइ कि उ पचे
आपन राहन क चिंतन करइँ। किन्तु मूरखन आपन मूरखता
स धोका खात ह।
9एक मूरख आपन कीन्ह भवा बुरा करम क दण्ड पइ
जेका ओका देइ होइ हसँत ह। किन्तु एक बुद्धि मान मनइ
छमा पावइ क जतन करत ह।
10हर मन आपन निजी पीड़ा क जानत ह, अउर ओकर
दुःख कउनो नाहीं बाँटि पावत ह।
11दुट्ठ क इमारत क ढहाइ दीन्ह जाइ, मुला सज्जन क
डेरा फूली फली।
12अइसी ही राह होत ह जउन मनई क उचित जान पड़त
ह; मुला परिणाम मँ उ मउत क लइ जात ह।
13हँसत भए भी हिरदय रोवत रहि सकत ह, अउर आनन्द
दुःखे मँ बदल सकत ह।
14बिस्सासहीन क, आपन कुमार्गन क फल भोगइ क
पड़ी; अउर सज्जन सुमार्गन क प्रतिफल पाइ।
15एक नादान सब कछू क बिस्सास कइ लेत ह। मुला
विवेकी जन सोच-समुझिके गोड़ धरत ह।
16बुद्धिमान मनई सचेत रहत ह अउर आपन क पापे स
दूर रखत ह। मुला मूरख मनई लापरवाह होत ह अउर
अतिबिस्सास रखत ह।
17अइसा मनई जेका हाली किरोध आवत ह, उ मूरखता
स भरा काम कइ जात ह अउर उ मनई छल-छंदी होत ह
उ तउ सब ही क पावत ह
18एक नादान जन क बस मूरखता मिल पावत ह मुला
एक बुद्धिमान मनइ क सिरे पइ गियान क मकुट होत ह।
19दुर्जन नीक लोगन क समन्वा सिर निहुरइहीं, अउर
दुट्ठ मनइ इमानदार लोगन क जरिए हराइ जाइ।
20गरीब क ओकर पड़ोसी भी दूर राखत हीं; मुला धनी
जन क मीत बहोत होत हीं।
21जउन आपन पड़ोसी क तुच्छ मानत ह उ पाप करत ह
मुला जउन गरीबन पइ दाया करत ह उ जन धन्न अहइ।
22अइसे मनइयन जउन सडयंत्र रचत हीं का गलती नाही
करत हीं? मुला जउन भली जोजना रचत हीं, उ तउ पिरेम
अउर बिस्सास पावत हीं।
23मेहनत क प्रतिफल मिलत हीं; मुला कोरा बकवास बस
दीनता लावत ह।
24विवेकी क प्रतिफले मँ धन मिलत ह; पर मूरखन क
प्रतिफले मँ सिरिफ मूरखता मिलत ह।

25एक सच्चा गवाह अनेक जिन्नगी बचावत ह। पर झूठा
गवाह, तबाही लावत ह।
26अइसा मनई जउन परमेस्सर स डेरात ह, उ परमेस्सर म
सुरच्छित जगह पावत ह। अउर हुवँइ ओनके गदेलन क भी
सरण मिलत ह।
27यहोवा क भय जिन्नगी क सोता होत ह, उ मनई क
मउत क फंदे स बचावत ह।
28विस्तृत बिसाल परजा राजा क महिमा अहइ, मुला परजा
बिना राजा नस्ट होइ जात ह।
29धीरज स पूर मनई बहोतइ समुझ-बूझ राखत ह। मुला
अइसा मनई जेका हालीं स किरोध आवइ उ तउ आपन ही
बेवकूफी देखावत ह।
30सान्त मन तने क जिन्नगी देत ह मुला जलन हाड़न
तलक नास कइ देत ह।
31जउन गरीब क सतावत ह, उ तउ सबक सिरजनहार
क अपमान करत ह। मुला उ तउ कउनो गरीब पइ दयालु
रहत ह, उ परमेस्सर क आदर करत ह।
32जब विनास आवत ह तउ दुट्ठ मनइ तबाह होइ जाइ;
मुला धर्मी जन तउ मउत मँ भी सुरच्छित स्थान पइ रहत ह।
33बुद्धिमान क हिरदय मँ बुद्धि क निवास होत ह, अउर
मूरखन क बीच भी उ आपन क जनावत ह।
34नेकी स रास्ट्र क उत्थान होत ह; मुला पाप हर जाति
क कलंक होत ह।
35विवेकी सेवक, राजा क खुसी अहइ, मुला उ सेवक
जउन मूरख होत ह उ ओकर किरोध जगावत ह।

15 कोमल जवाबे स किरोध सांत होत ह; किन्तु कठोर
वचन किरोध क भड़कावत ह।
2जब कउनो बुद्धिमान बोलत ह तउ दूसर ओका सुनइ
चाहत ह, मुला मूरख क मुँह बेवकूफी उगलत ह।
3यहोवा क आँखी हर कहूँ लगी भई अहइ। उ नीक-बुरे
क देखत रहत ह।
4दयावाली बात जिन्नगी क बृच्छ क नाईं अहइ। मुला
कपट स भरी वाणी मने क तोड़ देत ह।
5मूरख आपन बाप क डाँट फटकार क तिरस्कार करत
ह। मुला जउन डाँट फटकार पइ कान देत ह बुद्धिमान होत
ह।
6धर्मिन क घरे मँ बहोत सारा चिज रहत ह। दुट्ठ क
कमाई ओह पइ मुसिबत लिआवत ह।
7बुद्धिमान क वाणी गियान फइलावत ह, मुला मूरखन
क मन अइसा नाहीं करत ह।
8यहोवा दुट्ठ क चढ़ावा स घिना करत ह मुला ओका
सज्जन क पराथन ही खुस कइ देत ह।
9दुट्ठन क राहन स यहोवा घिना करत ह। मुला जउन
धार्मिकता क राहे पइ चलत हीं, ओनसे उ पिरेम करत ह।
10ओकरी प्रतीच्छा मँ कठोर दण्ड रहत ह जउन राहे स
भटक जात, अउर जउन सुधार स घिना करत ह, उ निहचय
मरि जात ह।
11जबकि यहोवा क समन्वा मउत अउ बिनासे क रहस्य
खुला पड़ा अहइँ। तउ निहचित रूप स उ लोगन क हिरदयन
क बारे मँ बहोत जियादा जानत ह।
12उ व्यक्ति जउन डाँट फटकार करइवालन क मजाक
उड़ावत ह, उ विवेकी स परामर्स नाहीं लेत।
13मने क खुसी मुँह क चमकावत, मुला मने क दर्द
आतिमा क कुचरि देत ह।
14जउने मने क नीक-बुरा क बोध होत ह उ तउ गियान
क खोज मँ रहत ह मुला मूरख क मन, मूरखता पइ लागत
ह। 15गरीब व्यक्ति बरे हर एक दिन बुरा अहइ, किन्तु
आनन्दित हिरदय बरे हर एक दिन उत्सव क नाईं अहइ।
16बेचैनी क संग प्रचुर धन उत्तिम नाही, यहोवा भय मानत
रहइ स तनिक भी धन उत्तिम अहइ।
17घिना क संग जियादा खइया स, पिरेम क संग थोड़ा
भोजन उत्तिम अहइ।
18किरोधी जन वाद-विवाद भड़कावत ह। जबकि सहइवाला
मनई वाद-बिवाद क सुलझावत ह।
19आलसी क राह काँटन स रूँधी रहत हीं, जबकि
सज्जन क मारग राजमार्ग होत ह।
20विवेकी पूत अपने बाप क खुस करत ह, मुला मूरख
मनई अपनी महतारी स घिना करत ह।
21निर्बुद्धि मनई सोचत ह कि मूरखता मजाक अहइ।
मुला समुझदार मनई सोझ राह चलत ह।
22बिना परामर्स क जोजना बिफल होत हीं। किंतु एक
मनई अनेक सलाहकारन क परामर्स स सफल होत ही।
23मनई उचित जवाब देइ स खुस होत ह। जइसा उचित
होइ समय क बचन केतना उत्तिम अहइ।
24बुद्धिमान जन क मारग ओका ऊँच स ऊँच लइ जात
ह, अउर ओका मउत क गड़हा मँ गिरइ स बचा रहइ।
25यहोवा अभिमानी क घरे क छिन्न-भिन्न करत ह। मुला
उ गरीब राँड़ क भुइयाँ क देखरेख करत ह।
26दुट्ठन क जोजना स यहोवा क घिना अहइ। पर
सज्जनन क जोजना ओका हमेसा भावत हीं।
27लालची मनई अपने घराने पइ हमेसा बदनामी लिआवत
ह मुला उहइ सांति स जिअत रहत ह जउन जन-घूस स
घिना भाव राखत ह।
28धर्मी जन बोलइ स पहिले सोचत ह। मुला दुट्ठ जन
बेसोचे समुझे बियर्थ बातन बोलत ह।
29यहोवा दुट्ठन स दूर रहत ह, बहोत दूर; मुला उ धर्मी
क पराथना सुनत ह।
30आंनद स भरी आँखी क चमक मने क हर्सित करत ह,
नीक खबर हाड़न तलक ताकत पहोंचावत ह।
31जउन जीवनदायी डाँट सुनत ह, उहइ बुद्धिमान जनन क
बीच चैन स रही।
32अइसा मनई जउन अनुसासन क उपेच्छा करत, उ तउ
आपन जिन्नगी क ही रद्द करत ह। मुला जउन सुधार पइ
धियान देत ह समुझ-बूझ पावत ह।
33यहोवा क भय लोगन क गियान सिखावत ह। आदर
पावइ स पहिले नम्रता आवत ह।

16 मनई तउ आपन जोजना क बनावत ह, मुला
ओनका यहोवा ही कारज क रूप देत ह।
2मनई क आपन राहन पाप रहित लागत हीं; मुला यहोवा
ओकरी नियत क परखत ह।

3जउन कछू तू यहोवा क समर्पण करत अहा तोहार सारी जोजनन सफल होइहीं।

4यहोवा हर एक चिजियन बरे जोजना बनाएस ह, अउर आपन जोजना क मुताबिक दुट्ठन क नास कीन्ह जाब।

5जेनके मने मँ अहंकार भरा भवा अहइ, ओनसे यहोवा घिना करत ह। एका तू सुनिहचित जाना, कि उ पचे बगैर सजा पाए नाहीं बचिहीं।

6वफादारी अउर सच्चाइ स अपराध क खतम किया जा सकत ह। यहोवा क आदर करइ स तू बुराइ स बचब्या।

7यहोवा क जब मनई क राहन भावत हीं, उ ओकरे दुस्मनन क भी संग सान्ति स रहइ क मीत बनाइ देत ह।

8अनिआव स मिले जियादा क अपेच्छा, नेकी क संग तनिक मिलब ही उत्तिम अहइ।

9मने मँ मनई निज राहन रचत ह, मुला यहोवा ओकरे गोड़न क सुनिहचित करत ह।

10राजा जउन बोलत ह नेम बन जात ह। ओका चाही उ निआव स नाहीं चूकइ।

11यहोवा चाहत ह कि सबइ तराजू अउ बाट खरा होइ। उ चाहत ह कि सबइ व्यापारिक कारोबार निस्पच्छ होइ।

12विवेकी राजा, बुरे करमन स घिना करत ह काहेकि नेकी पइ ही सिंहासन टिकत ह।

13राजा लोगन क निआव स भरी वाणी पसन्द करइ
चाही। जउन जन फुरइ बोलत ह, उ पचन्क ओका सम्मान
देइ चाइही। 14राजा क कोप मउत क दूत होत ह मुला
गियानी जन स ही उ सांत होइ।

15राजा जब खुस होत ह तब सबइ क जिन्नगी उत्तिम होत ह, अगर राजा तोहसे खुस अहइ तउ उ बसंत ऋतु क बर्खा जइसी अहइ।

16विवेक सोना स जियादा उत्तिम अहइ, अउर समुझबूझ पाउब चाँदी स उत्तिम अहइ।

17सज्जन लोगन क राह बदी स दूर रहत ह। जउन आपन राहे क चौकस करत ह, उ आपन जिन्नगी क रखवारी करत ह।

18नास आवइ स पहिले अहंकार आइ जात ह; अउ पतन स पहिले अहंकारी आवत ह।

19स्वाभिमानी लोगन क संग लूटक सम्पत्ति बाँट लेइ स, दीन अउ गरीब लोगन क संग विनम्र रहब उत्तिम अहइ।

20जउन भी आपन कारोबार म अच्छा अहइ उ फूली-फली। अउर जेकर भरोसा यहोवा पइ अहइ उहइ धन्न अहइ।

21बुद्धिमान मनवाला विवेक कहवावत हीं। अउर उ व्यक्ति जउन सवधानी स सब्दन क चुनत ह उ जियादा बिस्सास जोग्ग होत ह।

22जेनके लगे समुझबूझ अहइ, ओनके बरे समुझबूझ जिन्नगी सोता होत ह, मुला मूरखन क मूढ़ता ओनका सजा दिआवत ह।

23बुद्धिमान क हिरदय आपन वाणी क अनुसासन मँ धरत ह; अउर बिस्सास जोग्ग सब्दन क जाड़त ह।

24मन क भावइ वाली वाणी सहद जइसी होत ह। ओनका सरलता स ग्रहण किया जात ह अउर तोहार स्वास्थ्य बरे नीक होत ह।

25मारग अइसा भी होत ह जउन उचित जान पड़त ह, मुला परिणाम मँ उ मउत क जात ह।

26काम करइवाला क भूखे स भरी सबइ इच्छा ओहसे काम करवावत रहत हीं। इ भूख ही ओका अगवा ढकेलत ह।

27बुरा मनई सडयंत्र रचत ह, अउर ओकर वाणी अइसी होत ह जइसी झुरसत आगी।

28उत्पाती मनई बात-विवाद भड़कावत ह। अउर कानाफूसी करइ वाला निचके क मीतन क फोड़ देत ह।

29आपन पड़ोसी क उ हिसंक फँसाइ लेत ह अउर कुमारग पइ ओका हींच लइ जात ह।

30जब भी मनई आँखी स इसारा कइके योजनन क रचत रहत ह उ बिनासकारी ह। जब पड़ोसी क चोट पहुचावइ बरे जोजना रच लेत ह तउ उ हसँत ह।

31सफेद बार महिमा मुकुट होत हीं जउन धर्मी जिन्नगी स मिलत हीं।

32धरि जन कउनो जोधा स भी उत्तिम अहइँ, अउर जउन किरोध पइ नियंत्रण धरत ह, उ अइसे मनई स उत्तिम होत ह, जउन पूरे सहर क जीत लेत ह।

33पासा तउ झोरी मँ डाइ दीन्ह जात ह, मुला ओकर हर फैसला यहोवा ही करत ह।

17 झंझट झमेला भरे घरे क दावत स चैन अउ सान्ति क सूखी रोटी क टूका खाउब उत्तिम अहइ।

2बुद्धिमान दास एक अइसे पूत पइ सासन करी जउन घरे बरे सर्मनाक होत ह। बुद्धिमान दास उ पूत क जइसा ही बसीयत पावइ मँ सहभागी होइ।

3जइसे चाँदी अउ सोना क आगी मँ डाइ क सुद्ध कीन्ह
जात ह वइसे ही यहोवा लोगन क हिरदय क परखत सोधत
ह 4दुट्ठ जन, दुट्ठ क वाणी क सुनत ह, लबार बैर भरी
वाणी पइ धियान देत ह।

5अइसा मनई जउन गरीब क हँसी उड़ावत ह, उ ओकरे सिरजनहार क अपमान करत ह। अउर उ जउन कउनो दूसर क समस्या पइ खुस होत ह सजा झेलब्या।

6नाती-पोतन बृद्ध जन क मकुट होत हीं, अउर महतारी-बाप ओनके लरिकन क मान अहइँ।

7मूरख बरे जियादा बोलब उत्तिम नाहीं अहइ वइसे ही सासक क झूठ बोलब केतना बुरा होइ!

8घूस देइवाले क घूस महामंत्र जइसे लागत ह, जेहसे उ जहाँ भी जाइ, सफल ही होइ जाइ।

9जदि कउनो मनइ कउनो क जउन ओकर बुरा किहस ह छमा कइ देत ह तउ उ पचे दोस्त होइ सकत ह। किन्तु उ मनइ जउन छमा करत ह उ लगातार दूसर क गलती क याद करत ह तउ ओनकर दोस्ती टूट जात ह।

10विवेकी क धमकाउब ओतना प्रभावित करत ह; जेतना मूरखन क सौ-सौ कोड़न भी नाहीं करतेन।

11दुट्ठ जन तउ बस हमेसा विद्रोह करत रहत ही; ओकरे बरे दाया स हीन अधिकारी पठवा जाइ।

12आपन बेवकूफी मँ चूर कउनो मूरख स मिलइ स अच्छा बाटइ, कि उ रीछिन स मिलब जेहसे ओकर बच्चन क छीन लीन्ह गवा होइ।

13भलाई क बदले मँ अगर कउनो बुराई करइ तउ ओकरे घरे क बुराई नाहीं तजी।

14झगड़ा सुरू करब अइसा अहइ जइसे बाँध क टूटब अहइ, तउ, एकरे पहिले कि तकरार सुरू होइ जाइ बात खतम करा।

15यहोवा एन दुइनउँ ही बातन स घिना करत ह, दोखी क छोड़ब, अउर निर्दोख क सजा देब।

16मूरख क हाथन मँ धने क का प्रयोजन। काहेकि, ओका चाह नाहीं कि बुद्धि क मोल लेइ।

17मीत तउ सदा-सर्वदा पिरेम करत ह। एक सच्चा भाइ बुरे दिनन मँ साहयता करत ह।

18विवेकहीन जन ही किरिया स हाथ बँधाइ लेत अउर आपन पड़ोसी क ऋृण ओढ़ लेत ह।

19जेका लड़ाई - झगड़ा भावत ह, उ तउ सिरिफ पापे स पिरेम करत ह अउर जउन डींग हाँकत रहत ह उ तउ आपन ही नास बोलावत ह।

20कुटिल हिरदय जन कबहुँ फूलत फलत नाहीं अउर जेकर वाणी छली भइ अहइ, विपद मँ गिरत ह।

21मूरख पूत बाप बरे पीरा लिआवत ह, मूरख क बाप क कबहुँ आनंद नाहीं होत।

22खुस रहब सब स बड़की दवा अहइ, मुला बुझा मन हाड़न क झुराइ देत ह।

23दुट्ठ मनई, निआव क गलत उपयोग करइ बरे एकांत मँ घूस लेत ह।

24बुद्धिमान जन बुद्धि क समन्वा धरत ह, मुला मूरख क आँखिन धरती क छोरन तलक भटकत हीं।

25मूरख पूत बाप क तेज ब्यथा देत ह, अउर महतारी बरे जउन ओका जनम दिहस, कडुवाहट भरि देत ह।

26कउनो निर्दोख क दण्ड देब उचित नाहीं, ईमानदार नेता क पीटब नीक नाहीं अहइ।

27गियानी जन खामूस रहत ही, समुझ-बूझ वाला जन आपन पइ काबू राखत ह।

28मूरख भी जब तलक नाहीं बोलत नीक लागत ह। अउर अगर आपन वाणी रोकइ तउ गियानी जाना जात ह।

18 कछू मनई आपन इच्छा क अनुसार काम करत ही। जदि दूसर कउनो ओनका सलाह देत ह तउ उ कोहान जात ह।

2मूरख जन दूसर स सीखइ मँ खुस नाही होत ह। उ जउन कछू सोचत ह उहइ बोलत मँ खुस होत ह।

3लोग दुट्ठ व्यक्ति क नाही चाहवत ह। लोग मूरख लोग क मजाक उड़ावत ह।

4बुद्धिमान क सब्द गहिर जल क नाईं होत हीं, उ पचे बुद्धि क सोता स उछरत भए आवत हीं।

5दुट्ठ जन क पच्छ लेब अउर निर्दोख क निआव स वंचित राखब उचित नाहीं होत।

6मूरख क होठंन बात-विबाद क जनम देत ह अउर आपन मुँह क कारण उ पिटा जात ह।

7मूरख क मुँह ओकरे कामे क बिगाड़ देत ह अउर ओकर आपन ही होंठन क जाले मँ ओकर परान फँसि जात ह।

8लोग हमेसा गपसप सुनइ चाहत ही। इ उत्तिम भोजन क नाईं अहइ जउन पेट क भीतर उतरत चला जात ह।

9जउन अपन काम मंद गति स करत ह, उ ओकर भाई अहइ, जउन विनास करत ह।

10यहोवा क नाउँ एक सुदृढ़ गढ़ क नाईं अहइ। उ कइँती धर्मी जन दौड़ जात हीं अउर सुरच्छित रहत हीं।

11धनिक समुझत ही कि ओनकर धन ओनका बचाइ लेइ उ पचे समुझत हीं कि उ एक सुरच्छित किला अहइ।

12पतन स पहिले मन अंहकारी बन जात ह, मुला सम्मान स पूर्व विनम्रता आवत ह।

13बात क बिना सुने ही, जउन जवाब मँ बोल पड़त ह, उ ओकर बेवकूफी अउ ओकर अपजस अहइ।

14मनई क मन ओका बियाधि मँ थामे राखत ह; मुला टूटे हिरदय क भला कउनो कइसे थामइ।

15बुद्धिमाान क मन गियान क पावत ह, बुद्धिमान क कान एका खोज लेत हीं।

16उपहार देइवाले क मारग उपहार खोलत ह अउर ओका महापुरुसन क समन्वा पहोंचाइ देत ह।

17पहिले जउन बोलत ह ठीक ही लागत ह मुला बस तब तलक ही जब तलक दूसर ओहसे सवाल नाहीं करत ह।

18अगर दुइ बरिआर आपुस मँ झगड़त होइँ, उत्तिम अहइ कि ओनके झगड़न क पाँसा बहाइके निपटाउब।

19रूठे भए बन्धु क मनाउब कउनो गढ़ वाला सहर क जीत लेइसे जियादा कठिन अहइ। अउर आपुसी झगड़न अइसे होत ही जइसे गढ़ी क मुँदे दुआर होत हीं।

20मनई क पेट ओकरे मुँहे क फले स ही भरत ह, ओकरे होंठन क खेती क प्रतिफल ओका मिलत ह।

21जीभ क वाणी जिन्नगी अउर मउत क सक्ती रखत ह। अउर जउन वाणी स पिरेम राखत हीं, उ पचे ओकर फल स आनन्दित होत हीं।

22जेका नीक पत्नी मिली अहइ, उ उत्तिम पदार्थ पाएस ह। ओका यहोवा क अनुग्रह मिलत ह।

23गरीब जन तउ दाया क माँग करत ह, मुला धनी जन तउ कठोर जवाब देत ह।

24बहोत सारे मीतन क संगत तबाही लाइ सकत ह। किंतु आपन घनिष्ठ मीत भाई स भी उत्तिम होइ सकत ह।

19 उ गरीब मनइ ओन व्यक्ति स बेहतर अहइ जउन झूट बोलत ह अउ मूरख अहइ।

2बिना गियान क उत्साह राखब नीक नाहीं अहइ एहसे उतावली मँ गलती होइ जात ह।

3मनई आपन बेवकूफी स आपन जिन्नगी बिगाड़ लेत ह, मुला उ यहोवा क दोखी ठहरावत ह।

4धन स बहोत सारे मीत बन जात हीं, मुला गरीब जन क ओकर मीत भी तजि जात ह।

5लबार गवाह बगैर सजा पाए नाहीं बची अउर जउन झूठ उगलत रहत ह, छूटइ नाहीं पाई।

6बहोत स लोग सासक क खुस करइ क जतन करत ह अउर हर एक मनइ ओकर मीत बन जावा चाहत हीं, जउन उपहार देत रहत ह।

7निर्धन क सब संबंधी ओहसे कतरात हीं। ओकर मीत ओहसे केतना बचत फिरत हीं, जदपि उ ओन लोगन स मदद बरे बिनती करत हीं तउ पइ भी उ पचे ओकर लगे नाहीं जाइहीं।

8जउन गियान पावत ह उ आपन प्राण स ही प्रीति राखत ह, उ जउन समुझ-बूझ बढ़ावत रहत ह फलत अउर फूलत ह।

9लबार गवाह सजा पाए बिना नाहीं बची, अउर उ, जउन झूठ उगलत रहत ह, ध्वस्त होइ जाइल।

10मूरख धनी नाहीं बनइ चाही। उ अइसे होइ जइसे कउनो दास युवराजन पइ राज करइ।

11बुद्धिमान मनइ सदा साँत रहत ह। जब उ ओन लोगन क छिमा करत ह जउन ओकरे खिलाफ होइँ, तउ ओकर सम्मान अउर भी बढ़ जात ह।

12राजा क किरोध सेर क दहाड़ जइसा अहइ, मुला ओकर कृपा घास पइ ओसे क बूँद स होत ह।

13मूरख पूत आपन बाप बरे बिनासे क लावत ह। अउर एक झगरालू पत्नी हमेसा टपकइ वाला पानी क नाईं अहइ।

14भवन अउ धन-दौलत महतारी बाप स विरासत मँ मिल जात ह। मुला बुद्धिमान पत्नी यहोवा क ओर स धन्न अहइ।

15आलस गहिर घोर नींद देत ह; मुला उ आलसी भूखा मरत ह।

16अइसा मनई जउन आदेसन पइ चलत ह उ आपन जिन्नगी क रच्छा करत ह। मुला जउन आदेसन क उपेच्छा करत ह उ निहचय ही मउत अपनावत ह।

17गरीब पइ किरपा देखाउब यहोवा क उधार देब अहइ, यहोवा ओका, ओकरे इ कामे क प्रतिफल देइ।

18तू आपन पूत क अनुसासित करा अउर ओका सजा द्या, जब उ अनुचित होइ। बस इहइ आसा अहइ। अगर तू अइसा करइ क मना करा, तब तउ तू ओकरे बिनासे मँ ओकर सहायक बनत अहा।

19अगर कउनो मनई क तुरंत किरोध आवइ, ओका एकर कीमत चुकावइ क होइ। अगर तू ओकर रच्छा करत अहा, तउ केतनी ही बार तोहे ओका बचावइ क होइ।

20सुमति पइ धियान द्या अउर सुधार क अपनाइ ल्या तू जेहसे आखीर मँ तू बुद्धिमान बन जा।

21मनई अपने मने मँ का का करइ क सोचत ह; किंतु यहोवा क जोजना पूरा होत ह।

22लोग चाहत हीं मनई बिस्सास जोग्ग अउ सच्चा होइ। एह बरे गरीबी मँ बिस्सास क जोग्ग अउ सच्चा बनके रहब उचित अहइ अइसा मनई स जउन झूटा अउर धनी अहइ।

23यहोवा क भय सच्ची जिन्नगी क राह देखावत ह, एहसे मनई सान्ति पावत ह अउर कस्ट स बचत ह।

24एक आलसी आपन हाथ थारी मँ डालत ह मुला उ ओका मुँहे तलक उठावइ मँ बहोत सुस्ती क अनुभव करत ह।

25ठट्ठा करइवाला मनई क मारा ताकि एक साधारन जन आहसे सीख पाइ। मामूली डाँट डपट ही एक बुद्धिमान मनई बरे काफी होत ह।

26अइसा पूत जउन निन्दा क जोग्ग करम करत ह घरे क अपमान होत ह; उ अइसा होत ह जइसे पूत कउनो आपन बाप स छोरइ अउर घरे स असहाय महतारी क निकारि बाहेर करइ।

27हे मोर पूत अगर अनुसासन पइ धियान देब तजि देब्या, तउ तू गियान क बचनन स भटक जाब्या।

28भ्रस्ट गवाह निआव क सम्मान नाहीं देत ह। अउर दुस्ट क मुँह बुराई क भस्म कर देत ह।

29उ जउन सम्मान नाहीं देत ह सजा पाइ, अउर मूरख जन क पीठ कोड़न खाइ।

20 सराब अउ दाखरस लोगन क काबू मँ नाहीं रहइ देतेन। उ ओनका हल्ला करइवाला अउर सेरवी जतावइ वाला बनावत ह। अउर उ जउन मदमसत होइ जात ह मूरखता क कार्य करत ह।

2राजा क किरोध सेर क दहाड़ क सम्मान होत ह, जउन ओका किरोधित करत ह, प्राण स हाथ धोवत ह।

3झगड़न स दूर रहब मनई क आदर अहइ। मुला मूरख जन तउ सदा झगड़ा करइ बरे तइयार रहत ह।

4मौसम आवइ पइ अदूरदर्सी आलसी हर नाहीं डावत ह, तउ कटनी क समइ उ ताकत रहि जात ह अउर कछू भी नाहीं पावत ह।

5व्यक्ति क सोच गहिर पानी क नाईं होत ह। किंतु समुझदार मनई ओनका बाहेर हींच लेत ह।

6लोग आपन बिस्सास जोग्गता क बहोत ढोल पीटत हीं। मुला बिस्सास क जोग्ग जन क कउन खोज सकत ह?

7धर्मी जन बेकलके क जिन्नगी जिअत ह ओकरे पाछे आवइवाली संतानन धन्न अहइँ।

8जब राजा निआव क सिंहासने पइ विराजत भवा आपन दृस्टि माय स बुराई क फटकि के छाँटत हइ।

9कउन कहि सकत ह, "मइँ आपन हिरदय रखेउँ ह, मइँ बिसुद्ध, अउर पाप रहित हउँ?"

10एन दुइनउँ स, खोट बाटन अउर खोट नापन स यहोवा घिना करत ह।

11बालक भी आपन करमन स जाना जात ह, कि ओकर चालचलन सुद्ध अहइ, या नाहीं।

12यहोवा कान बनाएस ह कि हम सुनी। यहोवा आँखिन बनाएस ह कि हम लखी। यहोवा इ दुइनउँ क एह बरे हमरे बरे बनाएस।

13नींद स पिरेम जिन करा दरिद्र होइ जाब्या; तू जागत रहा तोहरे लगे भरपूर भोजन होइ।

14गाहक बेसहत समइ कहत ह, "अच्छा नाहीं, बहोत मँहग!" मुला जब उ हुआँ स उ दूर चला जात ह आपन खरीद क सेखी बघारत ह।

15कउनो मनई क लगे सोना बहोत बाटइ अउर मणिमाणिक बहोत ढेर अहइँ, मुला अइसे ओंठ जउन बातन गियान क बतावत दुर्लभ रतन होत हीं।

16जउन कउनो अजनबी क ॠण क जमानत देत ह उ आपन ओढ़ना तलक गँवाइ बइठत ह।

17छले स कमाई रोटी मीठ लागत ह पर अंत मँ ओकर मुँह काँकरे स भरि जात ह।

18सबइ जोजना स पहिले तू उत्तिम सलाह पाइ लिहा करा। जदि तोहका जुद्ध करब होइ तउ उत्तिम लोगन स अगुवाइ ल्या।

19बकवादी रहस्य क फास कइ देत ह। यह बरे रहस्यमय बातन क बकवादी मनई स जिन कहा।

20कउनो मनई आपन बाप क या आपन महतारी क कोसइ, ओकर दीया बुझ जाइ अउर गहिर अँधियारा होइ जाइ।

21बेइमानी स प्राप्त कीन्ह गवा सम्पत्ति अंत मँ आसीस नाही लाइहीं।

22इ बुराई क बदला मइँ तोहसे लेब। अइसा तू जिन कहा, यहोवा क बाट जोहा तोहका उहइ अजाद करी।

23यहोवा खोटे बटखरन, गलत तराजू अउ पेमाना स घिना करत ह। खोटा माप नीक नाहीं बाटइ।

24यहोवा फैसला करत ह कि हर एक मनई क जिन्नगी मँ का होइ। कउनो मनई कइसा समुझ सकत ह कि ओकरे जिन्नगी मँ का घटइवाला अहइ?

25परमेस्सर क कछू अर्पण करइ क प्रतिग्या स पहिले ही विचार ल्या; भली भाँति विचार ल्या। होइ सकत ह जदि तू पाछे अइसा सोचा, "मइँ उ प्रतिग्या नाहीं करत। किन्तु तोहका उ प्रतिग्या पूरा करइ क होइ जउन तू परमेस्सर स किहा ह।"

26विवेकी राजा इ फैसला करत ह कि कउन बुरा जन अहइ। अउर उ राजा उ जन क सजा देइ।

27यहोवा क दीपक जन क आतिमा क जाँच लेत ह। यहोवा जने क अन्दर तलक लखा सकत ह।

28वफादारी अउर सच्चाइ राजा क सुरच्छित रखत ह। किन्तु ओकर सिहांसन सिरिफ ओकर वफादारी पइ टिकत ह।

29नउजवानन क महिमा ओनके बल स होत ह अउर बृद्धन क गौरव ओनकर पके बाल अहइँ।

30अगर हमका सजा दीन्ह जाइ तउ हम बुरा करब तजि देइत ह। दर्द मनई क परिवर्तन कइ सकत ह।

21 राजा लोगन क मन यहोवा क हाथे होत ह, जहाँ
भी उ चाहत ह ओका मोड़ देत ह वइसे ही जइसे
कउनो किसान पानी क खेते क। 2सबहिं क आपन आपन
राहन उत्तिम लागत हीं; मुला यहोवा तउ मने क तउलत ह।

3तोहार उ करम क करब जउन उचित अउर नेक अहइ यहोवा क जियादा चढ़ावा चढ़ावइ स ग्राह्य बाटइ।

4घमण्डी आँखिन अउ दर्पीला मन पाप अहइँ इ सबइ दुट्ठ क दुट्ठता प्रकास मँ लिआवत हीं।

5परिश्रमी क योजनन फायदा देत हीं इ वइसे ही निहचित अहइ जइसे उतावली स गरीबी आवत ह।

6झूठ बोलि बोलिके कमावा धन दौलत अउ महिमा भाप क नाईं स्थिर नाहीं अहइ। अउर नाहीं अहइ, अउ उ घातक फंदा बन जात ह।

7दुट्ठ क हिंसा ओनका हींच लइ बूड़ी काहेकि उ पचे उचित करम करइ नाहीं चाहतेन।

8अपराधी क मारग कुटिलतापूर्ण होत ह मुला जउन नीक अहइँ ओनकर राह सोझ सच्चा होत हीं।

9झगड़ालू मेहरारू क संग घरे मँ निवास स, छत क कउने कोने पइ रहब नीक अहइ।

10दुट्ठ जन हमेसा बुराइ करइ क इच्छुक रहत ह। ओकर पड़ोसी ओहसे दाया नाहीं पावत।

11जब उच्छृंखल सजा पावत ह तब सरल जन क बुद्धि मिलि जात ह। मुला बुद्धिमान तउ डाँट फटकार करइ पइ ही गियान क पावत ह।

12निआव स पूर्ण परमेस्सर दुट्ठ क घरे पइ आँखी धरत ह, अउर दुट्ठ जन क उ नास कइ देत ह।

13अगर कउनो गरीब क, करुणा पुकार पइ कउनो मनई आपन कान बंद करत ह, तउ जब उ पुकारी तउ ओकर पुकार पइ भी कउनो उत्तर नाहीं दिहीं।

14गुप्त रूप स दीन्ह गवा भेंट किरोध क सांत करत ह। अउर गुप्त रूप स दीन्ह गवा उपहार खउफनाक किरोध क सांत करत ह।

15निआव जब पूर्ण होत ह धर्मी क सुख देत ह, मुला कुकर्मियन क महा भय होत ह।

16जउन मनई विवेक क पथ स भटकि जात ह, उ विस्राम करइ बरे मृतकन क साथी होइ जात ह।

17जउन सुख भोगन स पिरेम करत रहत ह उ दरिद्र होइ जाइ, अउर जउन दाखरस अउ अतर स पिरेम करत ह कबहुँ धनी नाहीं होइ।

18दुर्जन क कबहुँ ओन सबहिं चिजियन क फल भुगतइ क ही पड़ी, जउन सज्जन क खिलाफ करत ही। बेईमान लोगन क ओनके किए गए क फल भुगतइ पड़ी जउन ईमानदार लोगन क विरुद्ध करत ही।

19चिड़चिड़ी झगड़ालू मेहरारू क संग रहइ स रेतिस्तान मँ रहब उचित अहइ।

20विवेकी क घर मँ मनचाहा खइया क अउर इफरात तेल क भंडारा भरा होत ह मुला मूरख मनई जउन ओकरे लगे होत ह चट कइ जात ह।

21जउन जन नेकी अउ पिरेम क पालन करत ह, उ जिन्नगी संपन्नता अउर समादर क पावत ह।

22बुद्धिमान जन क कछू भी कठिन नाहीं अहइ। उ अइसे सहर पइ चढ़ाई कइ सकत ह जेकर रखवारी सूरबीर करत होइँ, उ उ परकोटे क ध्वस्त कइ सकत ह जेकरे बरे उ आपन सुरच्छा क बिस्सास मँ रहेन।

23उ जउन आपन मुँह क अउर आपन जीभ क बस मँ राखत ह उ आपन आप क बिपत्ति स बचावत ह।

24अइसा मनई अहंकारी होत ह, जउन आपन क औरन स स्रेस्ठ समुझत ह, ओकर नाउँ हीं "अभिमानी" होत ह। आपन ही करमन स उ देखाइ देत ह कि उ दुट्ठ होत ह।

25आलसी मनई बरे ओकर ही सबइ लालसा ओकरे मरण क कारण बन जात हीं काहेकि ओकरे हाथे करम क नाहीं अपनउतेन।

26कछू लालची लोग दिन भइ इच्छा करत ही कि ओका अउर मिलाइ। अउर किन्तु धर्मी जन तउ उदारता स देत ह।

27दुट्ठ क चढ़ावा यूँ ही घिना स पूर्ण होत ह फिन केतना बुरा होइ जब उ ओका बुरे भाव स चढ़ावइ?

28लबार गवाह क नास होइ जाइ अउर जउन ओकर
झूठी बातन क सुनी उ भी ओकरे संग हमेसा सर्वदा बरे
नस्ट होइ जाइ।
29दुट्ठ मनई बुरा करइ बर ठान लेत ह। किन्तु एक
ईमानदार व्यक्ति जानत ह कि ओकर राह सीधी अहइ।
30जदि यहोवा न चाहइ तउ, न ही कउनो बुद्धि अउर न
ही कउनो अन्तदृस्टि, न ही कउनो जोजनन पूरी होइ सकत
ह।
31जुद्ध क दिन तउ घोड़ा तैयार कीन्ह ह, मुला विजय
तउ बस यहोवा पइ निर्भर अहइ।

22 अच्छा नाउँ अपार धन पावइ स जोग्ग अहइ।
चाँदी, सोना स, तारीफ क पात्र होब जियादा उत्तिम
अहइ।
2धनियन मँ अउर निर्धनन मँ इ एक समता अहइ। यहोवा
ही एन सबहिं क सिरजनहार अहइ।
3कुसल जन जब कउनो विपत्ति क लखत ह, ओका
बचइ बरे एहर ओहर होइ जात ह मुला मूरख उहइ राहे पइ
बढ़त ही जात ह। अउर उ एकरे बरे दुःख ही उठत ह।
4जब मनई विनम्र होत ह अउ यहोवा क भय करत ह उ
धन-दौलत, आदर अउर जिन्नगी पाइही।
5कुटिल क राहन काँटन स भरी होत ह अउर हुआँ पइ
फंदन फइला होत ही; मुला जउन आतिमा क रच्छा करत ह
उ तउ ओनसे दूर ही रहत ह।
6बच्चन क जबकि उ छोटा अहइ जिन्नगी क नीक राह
क सिच्छा दइ। तउ उ बुढ़ापा मँ भी ओहसे भटकी नाहीं।
7धनी दरिद्रन पइ सासन करत हीं। उधार लेइवाला, देइवाल
क दास होत ह।
8अइसा मनई जउन दुट्ठता क बीज बोवत ह उ तउ
संकट क फसल काटी; अउर ओकर किरोध क लाठी नस्ट
होइ जाइ।
9उदार मने क मनई खुद ही धन्न होइ, काहेकि उ आपन
भोजन गरीब जने क संग बाँटिके खात ह।
10गुस्ताख मनई जउन कि कउनो क सम्मान नाहीं देत ह
क दूर करा तउ कलह दूर होइ। एहसे झगड़ा अउ अपमान
मिट जात हीं।
11उ जउन पवित्तर मने स पिरेम करत ह अउर जेकर
वाणी मनोरम होत ह ओकर तउ राजा भी मीत बन जात ह।
12यहोवा सदा विवेक क धियान राखत ह; मुला उ
बिस्सासघाती क कार्य क नास करत ह।
13काम नाहीं करइ क बहाना बनावत भवा आलसी कहत
ह, "बाहेर सेर बइठा अहइ, "होइ सकत ह कि गलियन मँ
मोका मार डावा जाइ।"
14बिभिचार क पाप गहिर गढ़ा क नाईं अहइ। यहोवा
ओहसे बहोतइ कोहाइ जाइ जउन भी इ मँ गिरी।
15लरिकन सैतानी करत रहत हीं; मुला अनुसासन क छड़ी
ही सैतानी दूर कइ देत ह।
16अइसा मनई जउन आपन धन बढ़ावइ बरे गरीब पइ
अत्याचार करत ह; अउर उ, जउन धनी क उपहार देत ह,
दुइनउँ ही अइसे जन अहइ जउन निर्धन होइ जात हीं।

तीस विवेक स भरी कहावतन

17बुद्धिमान क कहावतन सुना अउर धियान द्या। ओह
पइ धियान लगावा जउन मइँ सिखावत हउँ। 18अगर तू
ओनका आपन मने मँ बसाइ ल्या तउ बहोत नीक होइ; तू
ओनका हरदम आपन ओंठन पइ तैयार राखा। 19मइँ तोहका
आजु सिच्छा देत हउँ ताकि तोहार यहोवा पइ बिस्सास पैदा
होइ। 20इ सबइ तीस सीखन मइँ तोहरे बरे रचेउँ, इ सबइ
बचन सम्मति अउर गियान क अहइँ। 21उ सबइ बचन जउन
महत्वपूर्ण होतिन, इ सबइ सत्य बचन तोहका सिखइहीं ताकि
तू ओका उचित जवाब दइ सका, जउन तोहका पठएस ह।

-1-

22तू गरीब क सोसण जिन करा। एह बरे कि उ पचे बस
दरिद्र अहइँ; अउर कंगाले क कचहरी मँ जिन हीचा।
23काहेकि परमेस्सर ओनकर सुनवाई करी अउर जउन
ओनका लूटेन ह उ ओनका लूट लेइ।

-2-

24तू किरोधी सुभाव क मनइयन क संग कबहुँ मिताई
जिन करा अउर ओकरे संग, आपन क जिन जोड़ा जेका
हाली किरोध आइ जात ह। 25नाहीं तउ तू भी ओकरे राहे
चालब्या अउर आपन क जालि मँ फँसाइ बइठब्या।

-3-

26तू कउनो दूसर क कर्ज बरे जमानतदार नाहीं बना।
27जदि ओका चुकावइ मँ तोहार साधन चुकिहीं तउ खाले क
बिस्तर तलक तोहसे छोर लीन्ह जाइ।

-4-

28तोहरे धरती क सम्पत्ति जेकर चउहद्दिन तोहार पुरखन
निर्धारित किहन उस सीमा रेखा कबहुँ भी जिन हिलावा।

-5-

29अगर कउनो मनई आपन कारज मँ कुसल अहइ, तउ
उ राजा लोगन क सेवा करइ क जोग्ग अहइ। अइसे
मनइयन बरे जेनकर कछू महत्व नाहीं ओका काम करइ क
जरूरत नाहीं अहइ।

-6-

23 जब तू कउनो अधिकारी क संग खइया क बरे
बइठा तउ एकर धियान राखा, कि कउन तोहरे
समन्वा अहइ। 2अगर तू पेटू अहा तउ खाना पइ नियंत्रण
राखा। 3ओकरे स्वादिस्ट पकवानन क लालसा जिन करा
काहेकि उ खइया धोका बाज़ अहइ।

-7-

4धनवान बनइ क काम कइ कइके आपने क जिन
थकावा। तू संयम देखावइ क, बुद्धि अपनाइ ल्या। 5इ सबइ
धन सम्पत्तियन लखत हीं लखत लुप्त होइ जइहीं निहचय ही
आपन पंखन क फइलाइके उ पचे गरूड़ क नाईं अकासे मँ
उड़ि जइहीं।

-8-

6अइसे मनई क संग जउन स्वार्थी अहइ भोजन जिन
करा। तू ओकरे स्वादिस्ट पकवाने क लालसा जिन करा।
7काहेकि उ अइसा मनई अहइ जउन मन मँ हरदम
ओकरी कीमत क हिंसाब लगावत रहत ह; तोहसे तउ उ
कहत ह- "तू खा अउर पिआ" मुला उ मने स तोहरे संग
नाहीं अहइ।
8जउन कछू थोड़ा बहोत तू ओकर खाइ चुका अहा,
तोहका तउ उ भी उलटइ पड़ी अउर उ पचे तोहार कहे भए
आदर स पूर्ण वचन बियर्थ चला जइहीं।

-9-

9तू मूरख क संग बातचीत जिन करा, काहेकि उ तोहरे
विवेक स भरे वचनन स घिना ही करी।

-10-

10पुराने जमाने क सीमा क पत्थर क जिन सरका। अउर
अनाथे क भुइयाँ क जिन हड़पा। 11काहेकि ओनकर
संरच्छक सामरथ स पूरा अहइ, तोहरे खिलाफ ओनकर
मुकदमा उ लड़ी।

-11-

12तू आपन मन सीख क बातन मँ लगावा। तू गियान स
भरे बचनन पइ कान द्या।

-12-

13तू कउनो गदेला क अनुसासित करइ मँ कबहुँ जिन
रोका अगर तू कबहुँ ओका छड़ी स सजा देब्या तउ उ एहसे
नाही मरी।
14तू छड़ी स पीटिके ओका अउर ओकर जिन्नगी क
मउत स बचाइ लेब्या।

-13-

15हे मोर पूत, जदि तोहार मन विवेक स पूर्ण रहत ह तउ
मोर मन भी आनंद स पूर्ण रही। 16अउर जदि तोहार ओंठ
उचित बोलत हीं, तउ मइँ बहोत खुस होब्या।

-14-

17तू आपन मने मँ भी पापे स भरा मनइयन क बरे जलन
जिन करा। मुला तू एकर बजाए यहोवा स सदा डरा। 18तउ
तोहार लगे भविस्य होई, अउर तोहार आसा कबहुँ ध्वस्त
नाहीं होई।

-15-

19मोर पूत सुना! अउर विवेकी बनि जा अउर आपन मन
क नेकी क राहे पइ चलावा। 20तू ओनके संग जिन रहा
जउन पियक्कड़ अहइँ, अथवा अइसे, जउन ठूँस ठूँस गोस
खात हीं।
21काहेकि इ पचे पियक्कड़ अउर इ सबइ पेटू दलिद्र होइ
जइहीं, अउर इ ओनकर खुमारी, ओनका चिथड़न पहिरइहीं।

-16-

22आपन बाप क सुना जउन तोहका जिन्नगी दिहेस ह,
अपनी महतारी क निरादर जिन करा जब उ बुढ़िया होइ जाइ।
23सच्चाई क खरीद ल्या अउर ओका जिन बेचा। अइसे ही
विवेक, अनुसासन अउ समुझ क भी खरीद ल्या। 24नेक पूत
क बाप महा आनंद मँ रहत अउर जेकर पूत विवेक स पूर्ण
होत ह उ तउ ओहमाँ ही खुस रहत ह। 25तोहार महतारी
अउ तोहार बाप क आनंद प्राप्त होइ अउर तोहार महतारी
जउन तोहका जन्म दिहस, ओका खुसी मिलत रहइ।

-17-

26मोर पूत, मोहमाँ मन लगावा अउर तोहार आँखिन मोह
पइ टिकी रहइँ। मोका आदर्स माना। 27एक वेस्या गहिर
गड़हा होत ह। अउर एक बदकार मेहरारु मुसीबत स भरा
कुआँ अहइ। 28उ घात मँ रहत ह जइसे कउनो डाकू अउर
उ लोगन मँ बिस्सास हीनन क संख्या बढ़ावत ह।

-18-

29कउन बिपत्ति मँ अहइ? कउन दुःखे मँ पड़ा अहइ?
कउन झगड़न-टंटन मँ अहइ? कउने क सिकाइतन अहइँ?
कउन क घाव अहइ? केकर आँखिन लाल अहइँ? 30उ पचे
जउन लगातार दाखरस पिअत रहत हीं अउर जेनमाँ मसाला
मिली भइ दाखरस क ललक होत ह।
31जब दाखरस लाल होइ, अउर पिआलन मँ झिलमिलात
होइ अउ धीरे धीरे डावत जात होइ, ओका ललचाही आँखिन
स जिन लखा। 32सर्प क समान उ डसत, आखीर मँ जहर
भरि देत ह जइसे नाग भरि देत ह।
33तोहरी आँखिन मँ अजीब दृस्य तैरइ लगिहीं, तोहार मन
उल्टी-सोझ बातन मँ उलझी। 34तू अइसा होइ जाइ, जइसे
उफनत सागरे पइ सोवत रहत होइ अउर जइसे मस्तूल क
सिखर ओलरा होइ। 35तू कहब्या, "उ पचे मोका मारेन पर
मोका तउ दर्द क अनुभव नाहीं हुआ। उ पचे मोका पीटेन,
पर मोका याद ही नाहीं मइँ उठी क लायक नाहीं हउँ, मोका
पिअइ क अउर द्या।"

-19-

24 बुरे जन स तू कबहुँ डाह जिन करा। ओनकर
संगत क तू चाहत जिन करा। 2काहेकि ओनके
मन हिंसा क योजनन रचत अउर ओनकर ओंठ दुःख देइ क
बातन करत हीं।

-20-

3बुद्धि स घरे क निर्माण होइ जात ह, अउर समुझ स
ही उ थिर रहत ह। 4गियान क जरिये ओकर कमरा अद्भुत
अउर सुन्नर खजानन स भरि जात हीं!

-21-

5बुद्धिमान जन मँ महासक्ती होत ह अउर गियानी पुरूख
सक्ती क बढ़ावत ह। 6जुद्ध लड़इ बरे परामर्स चाही अउर
विजय पावइ बरे बहोत स सलाहकार।

-22-

7मूरख बुद्धि क नाहीं समुझत जब महत्व स पूर्ण बातन क चर्चा करत हीं तउ मूरख समुझ नाहीं पावत।

-23-

8सड्यंत्रकारी उहइ कहवावत ह, जउन बुरी योजनन बनावत रहत ह। 9मूरख क योजनन पापी अहइ अउर घमण्डी निन्दक जन क लोग तजि देत हीं।

-24-

10अगर तू बिपत्ति मँ हिम्मत छोड़ बइठब्या, तउ तोहार सक्ती केतनी थोड़ स अहइ।

-25-

11जदि कउनो क हत्तिया क कउनो सड्यंत्र रचइ तउ ओका बचावइ क तोहका जतन करइ चाही। 12तू अइसा नाहीं कहि सकत्या, "मोका एहसे का लेब।" यहोवा सब कछू जानत ह अउर इ भी उ जानत ह कि तू काहे काम करत अहा? यहोवा तोहका लखत रहत ह। उ तोहरे भीतर क जानत ह अउर उ हर एक क ओकर करमन क अनुसार प्रतिफल देत ह।

-26-

13हे मोर पूत, तू सहद खावा करा काहेकि उ उत्तिम अहइ। इ तोहका मीठ लागी। 14इहइ तरह इ तू भी जान ल्या कि आतिमा क तोहार बुद्धि मीठ लागी, अगर तू एका पउब्या तउ ओहमाँ निहित बाटइ तोहरी भविस्स क आसा अउर उ तोहार आसा कबहुँ भंग नाहीं होइ।

-27-

15धर्मी मनई क घरे क विरोध मँ लुटेरा क नाईं घात मँ जिन बइठा अउर ओकरे निवासे पइ जिन छापा मारा। 16काहेकि एक नेक चाहे सात दाईं गिरइ, फुन भी उठि बइठी। मुला दुट्ठ जन विपत्ति मँ बूड़ि जात ह।

-28-

17सत्रु क पत्तन पइ आनन्द जिन करा। जब ओका ठोकर लागइ, तउ आपन मन खुस जिन होइ द्या। 18अगर तू अइसा करब्या, तउ यहोवा लखी अउर उ तोहसे खुस नाहीं होइ, अउर उ तोहार दुस्मन पइ कोहाइ तजि देब।

-29-

19तू दुर्जनन क संग कबहुँ जलन जिन राखा, ओन लोगन क कारण किरोधित जिन होवा। 20काहेकि दुट्ठ जन क कउनो भविस्स नाहीं अहइ। दुट्ठ जन क दीया बुझाइ दीन्ह जाइ।

-30-

21हे मोर पूत, यहोवा स अउर राजा स डरा विद्रोहियन क संग कबहुँ जिन मिला। 22काहेकि उ पचे दुइनउँ अचानक नास ढाइ देइहीं ओन पइ; अउर कउन जानत ह केतनी खउफनाक विपत्तियन उ पचे पठइ देइँ।

कछू दूसर सूक्तियन

23इ सबइ सूक्तियन बुद्धिमान जनन क अहइँ:
निआव मँ पच्छपात करब उचित नाहीं अहइ। 24अइसा जन जउन अपराधी स कहत ह, "तू निरपराध अहा" लोग ओका कोसिहीं अउर जातियन तजि देइहीं। 25मुला जउन अपराधी क सजा देइहीं, सबहिं जन ओनसे खुस होइहीं अउर ओन पइ असीर्वाद क बर्खा होइ।

26निर्मल जवाबे स मन खुस होत ह, जइसे ओठंन पइ चुम्बन अंकित कइ देइ।

27पहिले बाहेर खेतन क काम पूरा कइ ल्या एकरे पाछे तू आपन घर बनावा।

28आपन पड़ोसी क विरूद्ध बगैर कउनो कारण गवाही जिन द्या, या तू आपन वाणी क कउनो क छलइ मँ जिन प्रयोग करा।

29जिन कहा अइसा, "ओकरे संग भी मइँ ठीक वइसा ही करब, मोरे संग जइसा उ किहेस ह।"

30मइँ आलसी व्यक्ति क खेते स निर्बुद्धि व्यक्ति क अंगुर क खेत स होत भए गुजरउँ। 31कंटीरी झाड़ियन निकरि आइ रहिन हर कहूँ खरपतवारे स खेत ढकि गवा रहा। अउर बाड़ पाथर क खंडहर होत रही। 32जउन कछू मइँ लखेउँ, ओहसे मोका एक सीख मिली। 33जरा एक झपकी, अउर तनिक स नींद, थोड़ा स सुस्ताब, धरिके हाथन पइ हाथ (दलिद्रता क बोलाउब अहइ) 34उ तोह पइ टूट पड़ी जइसे कउनो लुटेरा टूट पड़त ह, अउर अभाव तोह पइ टूट पड़ी जइसे कउनो सस्त्रधारी टूट पड़त ह।

सुलैमान क कछू अउर सूक्तियन

25 इ सबइ भी सुलैमान क कहावतन अहइ: एन सबइ क यहूदा क राजा हिजकिय्याह क सेवक लोग जमा किहे रहेन।

2कउनो विसय-वस्तु क रहस्य स पूर्ण राखइ मँ परमेस्सर क अधिकार अहइ। अउर राजा क कउनो बात पइ निर्णय करइ स पहिले खोज विचार करइ क अधिकार अहइ।

3जइसे ऊपर अन्तहीन अकास अहइ अउर खाले अटल धरती अहइ, वइसे ही राजा लोगन क मन होत हीं जेनकर ओर-छोर क अता पता नाहीं। ओकर थाह लेब कठिन अहइ।

4जदि तू चाँदी स ओकर मैल हटाउब्या तउ सुनार ओहसे पात्र बनाइ सकत ह। 5वइसे ही, जदि तू राजा क समन्वा स दुट्ठ क दूर करब तउ भलाइ ओकरे सिंहासने क मजबूत कइ देब।

6राजा क समन्वा आपन बड़ाई जिन बखाना अउर महापुरूखन क बीच ठउर जिन चाहा। 7काहेकि उत्तिम इ होइ जदि राजा तोहसे कहइ, "आवा हिआँ, आइ जा" अपेच्छा एकरे कि महापुरुखन क समच्छ तोहार अपमान कीन्ह जाइ।

8तू कउनो व्यक्ति क जल्दी मँ कचहरी जिन घसीटा। काहेकि होइ सकत ह कि उ तोहार गलती क पोल खोल दइ। तउ तू क कहब्या।

9जब तू आपन विरोधी क खिलाफ मँ मुकद्दमा प वाद-विवाद करत ह तउ दूसर व्यक्ति क राज फास जिन करा। 10अइसा न होइ जाइ कि कउनो जउन ऍका सुनत ह तोहका लज्जित करइ, तउ तू बदनाम होइ जाइही जेका कबहुँ मिटाइ नाहीं जाइ।

11उचित अवसर पइ बोला बात अइसा ही अहइ जइसे चाँदी क तस्त म सुनहरा सेब। 12बुद्धिमान मनई क कान बरे झिड़की सोना क बाली क नाईं अहइ।

13एक बिस्सास क जोग्ग दूत, जउन ओका पठवत हीं ओनके बरे फसल कटनी क समइ क ठंडी बयार क जइसे होत ह। उ आपन स्वामी क आतिम क ताजा कर देत ह।

14उ मनई बर्खा रहित बादरन अउर पवन क जइसा होत ह, जउन कछू देइ क वचन देत ह किन्तु एका देइ नाहीं चाहत ह।

15धीरा स पूर्ण बातन स राजा तलक मनावा जात हीं अउर नम्र वाणी हाड़ तलक तोरि सकत ह।

16जदपि सहद बहोत उत्तिम अहइ, पर तउ भी तू बहोत जियादा जिन खा। अउर जदि तू जियादा खाब्या, तउ उल्टी आइ जाइ अउर तू रोगी होइ जाब्या। 17वइसे ही तू पड़ोसी क घरे मँ बार-बार गोड़ जिन रखा। वरना उ तोहसे उब जाइ अउर तोहसे घिना करइ लागी।

18उ मनई, जउन झूटी गवाही आनप साथी क खिलाफ देत ह उ तउ अहइ हथौड़ा सा या तरवार सा या तीखे बाण सा। 19बिपत्ति क काल मँ भरोसा बिस्सासघाती पइ होत ह अइसा जइसे दु:ख देत दाँत या लँगड़ात गोड़।

20जउन कउनो ओकरे समन्वा खुसी क गीत गावत ह जेकर मन भारी अहइ, तउ उ अइसा ही अहइ जइसा जाड़े मँ ओकर ओढ़ना उतार लइ या ओकरे फोड़े पइ सिरका उड़ेलना।

21अगर तोहार दुस्मन कबहुँ भुखान होइ, ओकरे खाइ क बरे, तू खइया क दइ द्या, अउर जदि उ पिआसा होइ, तउ ओकरे करे पानी पिअइ क दइ द्या। 22अगर तू अइसा करब्या उ लज्जित होइ। इ ओकर सिर पइ जलत भवा कोयला क अंगार रखइ क जइसा होइ। यहोवा तोहका ओकर प्रतिफल देइ।

23उत्तर क हवा जइसे बर्खा लिआवत ह वइसे ही बेकार क बातन किरोध क बढ़ावत ह।

24झगड़ालू मेहरारू क संग घरे मँ रहइ स छते क कउनो कोने पइ रहब उत्तिम अहइ।

25कउनो दूर देस आई कउनो अच्छी खबर अइसी लागत ह जइसे थके माँदे पिआसे क सीतल जल।

26गाद भरा झरना या कउनो दूसित कुआँ सा होत उ धर्मी पुरूस जउन कउनो दुट्ठ आगे निहुर जात ह।

27जइसे बहोत जियादा सहद खाब अच्छा नाहीं वइसे आपन मान बढ़ावइ क जतन करब नीक नाहीं अहइ।

28अइसा जन जेका खुद पइ नियंत्रण नाहीं, तउ उ उ नगर जइसा अहइ, जेकर देवारन नाही अहइ।

मूरखन क सम्बन्ध मँ विवेक स भरी सूक्तियन

26 जइसे बरफ क गर्मी मँ पड़ब अउर जइसे कटनी क समइ पइ बर्खा का आउब उपयुक्त नाहीं अहइ वइसे ही मूरख क मान देब उपयुक्त नाहीं अहइ।

2अगर तू कउनो क कछू बिगाड़्या नाहीं अउर तोहका उ सराप देइ, तउ उ सराप बियर्थ होइ। ओकर सरापपूर्ण बचन तोहरे ऊपरि स यूँ उड़िके निकरि जाइ जइसे चंचल चिरइया जउन टिकिके नाही बइठत।

3जइसे घोड़े क चाबुक अहइ अउर खच्चर लगाम स काबू होत ह अइसे ही मूरख बरे डंडा अहइ।

4मूरख क ओकर मूरखता क अनुसार जवाब जिन द्या नाहीं तउ तू भी खुद मूरख सा देखब्या। 5तउ मूरख क मूरख वाला जवाब द्या नाहीं तउ उ आपन ही आँखिन मँ बुद्धिमान बन बइठी।

6मूरख क हाथन सँदेसा पठउब वइसा ही होत ह जइसे आपन ही गोड़न पइ कुल्हाड़ी मारब। इ बिपत्ति क बोलाउब क नाईं अहइ।

7कउनो मूरख क कहावत कहइ क जतन करइ वइसा ही अहइ जइसे कउनो लँगड़े क आपन लँगाड़ा गोड़ पइ चलइ क जतन करब।

8मूरख क सम्मान देब वइसा ही होत ह जइसे कउनो गुलेल मँ पाथर राखब।

9मूरख क मुँहे मँ सूक्ति अइसी होत ह जइसे सराबी क होथे मँ काँटेदार झाड़ी होइ।

10कउनो मूरख क या कउनो अनजाने मनई क काम पइ लगाउब खतरनाक होइ सकत ह। तू नाही जानत्या कि केका दु:ख पहोंची।

11जइसे कउनो कूकुर खाइके बेराम होइ जात ह अउर उल्टी कइके फुन ओका खात ह वइसे ही मूरख आपन मूरखता बार-बार दोहरावत ह।

12उ मनई जउन आपन क बुद्धिमान मानत ह, मुला होत नाही ह तउ उ कउनो मूरख स भी बुरा होत ह। ओकर बरे कउनो आसा नाहीं अहइ।

आलसी लोगन बरे कहावतन

13आलसी चिचियात रहत ह, काम नाहीं करइ क बहाने कबहुँ उ कहत ह सड़क पइ सेर बाटइ।

14जइसे आपन चूड़ी पइ चलत रहत ह किवाड़। वइसे ही आलसी बिस्तर पइ आपन ही करवटन बदलत ह।

15आलसी आपन हाथ थारी मँ डावत ह मुला ओकर आलस, ओकरे आपन ही मुँहे तलक ओका खइयाके नाहीं लिआवइ देत।

16आलसी मनई, निज क मानत ह महाबुद्धिमान। सातउँ गियानी पुरुखन स भी बुद्धिमान।

17अइसे राही जउन दूसरन क झगड़न मँ टाँग अड़ावत ह जइसे कूकुर पइ काबू पावइ बरे कउनो ओकर कान धरइ।

18-19कउनो मनई जउन आपन पड़ोसी क छलत ह अउर तउ कहत ह: मइँ तउ बस यूँ ही मजाक करत रहेउँ। वइसा ही अहइ जइसे कउनो पागल घातक तीर फेंकत ह अउर कउनो क मार देत ह।

20जइसे ईंधन बगैर आग बुझि जात ह वइसे ही कानाफूसी क बिना झगड़े मिटि जात हीं।

21कोयला अंगारन क अउर आगी क लपट क काठ जइसे भड़कावत ह, वइसे ही झगड़ालू झगड़न क भड़कावत ह।

22कानाफूसी करइ वाला क सब्दन वइसा ही सुआदिस्ट अहइ जइसा कि उ भोजन जउन आसानी स लोगन क पेट मँ उतरत चला जात ह।

23दुट्ठ मनवाले क चिकनी चुपड़ी बातन होत हीं अइसी, जइसे माटी क बर्तन पइ चिपके चाँदी क बर्क। 24घिना स पूर्ण मनई आपन मीठ वाणी स घिना क ढाँपत ह। किंतु आपन हिरदय मँ उ छले क पालत ह। 25ओकर मोहक वाणी स ओकर भरोसा जिन करा, काहेकि ओकरे मने मँ घिना स भरी बातन समाई अहइँ। 26छले स कउनो क घिना चाहे छुप जाइ मुला ओकर दुट्ठता सभा क बीच परगट हो जाइ।

27अगर कउनो गड़हा खोदत ह कउनो क बरे तउ उ खुद ही ओहमाँ गिरी सकत ह; अगर कउनो मनई कउनो पाथर क कउनो पइ लुढ़कावत जतन करत ह तउ उ उहइ पाथर स कुचला जाइ सकत ह।

28अइसा मनई जउन झूठ बोलत ह, ओनसे घिना करत ह जेनका नोस्कान पहोंचावत अउर चापलूस खुद क नास करत ह।

27 भविस्य क बरे सेखी जिन बघाड़ा। कउन जानत ह कि आगे का घटइ।

2आपन ही मुँहे स आपन बड़कई जिन करा दूसरन क तोहार तारीफ करइ द्या।

3कठिन अहइ पाथर ढोउब, अउर ढोउब रेत क, मुला इन दुइनउँ स कहूँ जियादा कठिन अहइ मूरख क जरिये उपजावा भवा कस्ट।

4किरोध क्रूर होत ह। प्रकोप बाढ़ क नाईं अहइ मुला जलन बहोत ही घातक अहइ।

5छुपे भए पिरेम स, खुली घुड़की उत्तिम अहइ।

6दोस्त क तमाचा पइ विस्सास कइ जा सकत ह कि तोहार मदद कइ सकत ह। किन्तु दुस्मन तोहार संग दाया करइ क बहाना बनावत ह। उ तोहका नोस्कान पहोंचाहीं।

7पेट भरि जाए पइ सहद भी नाहीं भावत मुला भुखिया मँ तउ हर चीज भावत ह।

8आपन घर स दूर भटकत भवा मनई अइसा अहइ जइसे कउनो चिरइया आपन घोंसला स दूर भटकत ह।

9इत्र अउर सुगंधित धूप मने क आनन्द स भरि देत हीं अउर मीत क सच्ची सम्मति स मन उल्लासे स भरि जात ह। 10आपन मीत क जिन बिसरा न ही आपन बाप क मीत क। अउर बिपत्ति मँ मदद बरे दूर आपन भाई क घरे जिन जा। दूर क भाई स पास क पड़ोसी नीक बा।

11हे मोर पूत, तू बुद्धिमान बन जा अउर मोर मन आनन्द स भरि द्या। ताकि मोरे निन्दा करइ वाला क मइँ जवाब दइ सकउँ। 12बिपत्ति क आवत लखिके बुद्धिमान जन दूर हट जात हीं किंतु मूरख जन बगैर राह बदले चलत रहत हीं अउर फँस जात हीं।

13जउन कउनो पराए मनई क जमानत भरत ह ओका आपन ओढ़ना भी खोवइ पड़ी।

14ऊँच सुरे मँ 'सुप्रभात' कहिके अलख भिंसारे आपन पड़ोसी क जिन जगाया करा। उ एक सराप क रूप मँ झेली आसीर्वाद मँ नाहीं।

15झगड़ालू मेहरारू अइसी होत ह जइसी बर्खा क दिनन मँ लगातार टपकइ वाला बर्खा।

16ओका रोकब वइसा ही होत ह जइसे कउनो हवा क रोकइ क बेकार जतन करत ह या मूठी मँ तेल क धरइ क जतन करत ह।

17जइसे लोहे स लोहा धार धरत ह, वइसे ही एक व्यक्ति दूसर व्यक्ति स सीखत ह।

18जउन कउनो अंजीरे क बृच्छ सींचत ह, उ ओकर फल खात ह। वइसे ही जउन आपन सुआमी क सेवा करत ह, उ आदर पाइ लेत ह।

19जइसे जल मुखड़ा क प्रतिबिंबित करत ह, वइसे ही हिरदय मनई क प्रतिबिंबित करत ह।

20मउत अउ कबर कबहुँ तृप्त नाहीं अइसा ही मनई क आँखिन भी तृप्त नाहीं होत ह।

21चाँदी अउ सोना क भट्ठी-कुठाली मँ परख लीन्ह जात ह। वइसे ही मनई उ तारीफ स परखा जात ह जउन उ पावत ह।

22तू कउनो मूरख क चूना मँ पीसिके चाहे जेतना महीन करा अउर ओका पीसिके अनाज जइसा बनाइ द्या ओकर चूरन मुला ओकरी मूरखता क, कबहुँ भी ओहसे दूर न कइ पउब्या।

23आपन रेवड़ क हानत तोहका निहचित ही जानइ चाही। आपन रेवड़ क धियान स देखरेख करा। 24काहेकि धन-दौलत तउ टिकाऊ नाहीं होतेन। इ राजमकुट पीढ़ी-पीढ़ी तलक बना नाहीं रहत ह। 25जब चारा कट जात ह, तउ नवी घास उग आवत ह। उ घास पहाड़ियन पइ स फुन बटोर लीन्ह जात ह। 26मेमनन क ऊन काट ल्या अउर ओढ़ना बना ल्या बोकरियन क खेतन खरीदइ बरे बेच ल्या। 27तोहरे परिवार क, तोहरे दास दासियन क अउर तोहरे आपन बरे भरपूर बोकरी क दूध होइ।

28 दुट्ठ क मने मँ सदा भय समाया रहत ह अउर जब कउनो पाछा नाहीं करत ह तउ भी भागत फिरत ह। किन्तु एक धर्मी जन क सदा निर्भय रहत ह वइसे होइ जइसे सेर निर्भय रहत ह।

2देस मँ जब पाप ही पाप होइ तउ उ देस क सासक लम्बी समइ बरे सासन नाहीं करब्या। अइसा मनई ही देस क स्थिर रखत ह अउर लम्बी समइ तलक सासन करब्या।

3उ राजा जउन गरीबे क दबावत ह, उ बर्खा क बाढ़ सा होत ह जउन फसल नाहीं छोड़त।

4जउन व्यवस्था क विधाने क तजि देत हीं, दुट्ठन क तारीफ करत हीं, मुला जउन व्यवस्था क विधान क पालन करत हीं ओनकर विरोध मँ लड़ाइ करत हीं।

5दुट्ठ जन निआव क नाहीं समुझत हीं। मुला जउन यहोवा क खोज मँ रहत हीं, ओका पूरी तरह जानत हीं।

6उ निर्धन जेकर राह खरी अहइ उ धनी मनई स जेकर राह दुट्ठ अहइ उत्तिम अहइ।

7विवेकी पूत व्यवस्था क विधानन क पालन करत ह। मुला जउन वियर्थ दोस्तन क साथी बनत ह, उ आपन बाप क निरादर करत ह।

8उ जउन मोट ब्याज उसूलिके आपन धन बढ़ावत ह, उ तउ इ धन जोरत ह कउनो अइसे दयालु बरे जउन गरीबन पइ दाया करत ह।

9जदि कउनो व्यक्ति परमेस्सर क सिच्छा पइ कान नाहीं देत तउ परमेस्सर ओनकर पराथना पइ धियान नाहीं देत ह।

10उ तउ आपन ही जालि मँ फँस जाइ जउन सीधे लोगन क बुर मार्गे पइ भटकावत ह। मुला निर्दोस लोगन उत्तिम आसीस पाइ।

11धनी मनई आपन आँखिन मँ बुद्धिमान होइ सकत ह किन्तू गरीब जन जउन बुद्धि होत ह सच्चाई क लखत ह।

12सज्जन जब जीतत हीं, तउ सब खुस होत हीं। मुला जब दुट्ठ क सक्ती मिल जात ह तउ एक भी अइसा मनई क खोज पाउब कठिन अहइ जउन कि खुस अहइ।

13जउन आपन पापन पइ पर्दा डावत ह, उ तउ कबहुँ नाहीं फूलत-फलत ह। मुला जउन आपन दोखन क कबूल करत ह अउर जउन गलत ह ओका तजत ह, उ दाया पावत ह।

14धन्न अहइ, उ पुरुस जउन यहोवा स डेरात ह। मुला जउन आपन जिद्दी अहइ, विपत्ति मँ गिरत ह।

15दुट्ठ सासक जउन असहाय जन पइ सासन करत हीं अइसे अहइ जइसे दहाड़त भवा सेर या झपट भवा रीछ।

16एक अविवेक सासक आपन लोगन पइ अत्याचार करत ह मुला जउन बुरे मारग स आए भए धने स घिना करत ह, लम्बी समइ तलक सासन करब्या।

17कउनो मनई क दूसर क हत्तिया क दोख ठहराया तउ उ मनई क सान्ति नाहीं मिली जब तलक कि उ नाही मरत ह। ओकर मदद जिन करा।

18अगर कउनो निहकलंक होइ तउ उ सुरच्छित अहइ। जदि उ बुरा मनई होइ तउ उ आपन सामरथ खोइ बइठी।

19जउन आपन धरती जोतत-बोवत ह अउर मेहनत करत ह, उसके लगे हमेसा भरपूर खाई क होइ। मुला जउन सदा सपनन मँ खोवा रहत ह, सदा दलिद्र होइ।

20एक इमानदार मनई बहोत सारा आसीस पावत ह। मुला उ मनई जउन हाली धनी बनइ क जतन करत रहत ह; बिना दण्ड क नाहीं बची।

21निर्णय देइ मँ पच्छपात करब अच्छा नाही होत ह। किन्तु कछू लोग तउ सिरिफ रोटी क एक टुकरा बरे अनिआय करब।

22सूम सदा धन पावइ क लालच करत रहत ह अउर नाहीं जानत कि ओकरी ताक मँ दलिद्रता बाटइ।

23उ जउन कउनो जने क सुधारइ क डाँटत ह, उ जियादा पिरेम पावत ह, अपेच्छा ओकरे जउन चापलूसी करत ह।

24कछू लोग होत हीं जउन आपन बाप अउर महतारी स चोरावत हीं। उ कहत ह, "इ बुरा नाहीं अहइ।" इ उ बुरा मनई जइसा अहइ। जउन घरे क भीतर आइके सबहिं चिजियन क तोड़-फोड़ कइ देत ह।

25लालची मनई तउ मतभेद भड़कावत ह, मुला उ मनई जेकर भरोसा यहोवा पइ अहइ फूली-फली।

26मूरख क आपन पइ बहोत भरोसा होत ह। मुला जउन गियान क राहे पइ चलत ह, सुरच्छित रहत ह।

27जउन गरीबन क दान देत रहत ह ओका कउनो बातन क अभाव नाहीं रहत। मुला जउन ओनसें आँखी मूँद लेत ह, उ सराप पावत ह।

28जब कउनो दुट्ठा सक्ती पाइ जात ह तउ सज्जन छुप जाइ क दूर चला जात हीं। मुला जब दुट्ठा जन क बिनास होत ह तउ सज्जनन क बृद्धि परगट होइ लागत ह।

29 जउन बार बार डाँट डपट खाइ क बाद भी उहइ बेउहार करत ह तउ निहचय ही उ अचानक बर्बाद होइ जाइ। ओकर बरे कउनो आसा तलक नाहीं बची।

2जब धर्मी जन क अधिकार पावत ह तउ लोग आनन्द
मनावत हीं। जब दुट्ठ सासक बन जात ह तउ लोग कराहत
हीं। 3अइसा जब जउन विवेक स पिरेम राखत ह, बाप क
आनन्द पहोंचावत ह। मुला जउन रंडियन क संगत करत ह,
आपन धन खोइ देत ह।

4निआव स राजा देस क स्थिरता देत ह। किन्तु राजा जब लालची होत ह तउ लोग आपन काम करवावइ बरे ओका घूस देत हीं। तब देस दुर्बल होइ जात ह।

5जउन अपने साथी क चापलूसी करत ह उ आपन गोड़वन बरे जाल पसारत ह।

6पापी खुद आपन बिछाइ भइ जालि मँ फँसत ह। मुला एक धर्मी गावत अउर खुस रहत ह।

7सज्जन चाहत हीं कि गरीब क निआव मिलइ किन्तु दुट्ठन क ओनकी तनिकउ चिन्ता नाहीं होत ह।

8जउन अइसा सोचत हीं कि हम दूसरन स उत्तिम अही, उ पचे विपत्ति उपजावत अउर सारे सहर क तहस-नहस कइ देत हीं। मुला जउन जन बुद्धिमान होत हीं, सान्ति क कायम करत हीं।

9बुद्धिमान जन जदि मूरख क साथ मँ वाद-विवाद सुलझावइ चाहत ह, तउ मूरख उत्तेजित हो जात ह मूरखता क बातन करत ह जेहसे दुइनउँ क बीच सन्धि नाहीं होइ पावत

10खून क पिआसे लोग, सच्चे लोगन स घिना करत हीं। किन्तु सच्चे लोग ओनकर जिन्नगी बचावइ क जतन करत ह।

11मूरख मनई क लउ बहोतइ हाली किरोध आवत ह। मुला बुद्धिमान धीरा धइके आपन पइ नियंत्रण राखत ह।

12जदि एक सासक झूठी बातन क सुनत ह तउ ओकर सब अधिकारी भ्रस्ट होइ जात हीं।

13एक हिंसाब स गरीब अउर जउन मनई क लूटत ह, उ समान अहइ। यहोवा ही दुइनउँ क बनाएस ह।

14अगर कउनो राजा गरीब पइ निआव स पूर्ण रहत ह तउ ओकर सासन बहोत लम्बे काल बना रही।

15सजा अउर डाँट स सुबुद्धि मिलत ह किन्तु जदि महतारी-बाप मनचाहा करइ क खुला छोड़ि देइँ, तउ उ आपन महतारी क लज्जा बनी।

16दुट्ठ क राज मँ पाप पनप जात हीं मुला अन्तिम जीत
तउ सज्जन क ही होत ह।
17पूत क दण्डित करा जब उ अनुचित करइ, फुन तउ
तोहका ओह पइ सदा ही घमण्ड होइ। उ तोहरी लज्जा क
कारण कबहुँ नाहीं होइ।
18अगर कउनो देस परमेस्सर क राहे पइ नाहीं चलत तउ
उ देस मँ सान्ति नाहीं होइ। किन्तु उ देस जउन परमेस्सर क
व्यवस्था पइ चलत ह, आनन्दित रही।
19सिरिफ सब्द मात्र स दास नाहीं सुधरत ह। चाहे उ
तोहार बात क समुझ लेइ, मुला ओकर पालन नाहीं करी।
20अगर कउनो बगैर बिचारे भए बोलत ह तउ ओकरे
बरे कउनो आसा नाहीं। जियादा आसा होत ह एक मूरख बरे
अपेच्छा उ मनई क जउन बिचारे बिना बोलइ।
21अगर तू आपन दास क सदा उ देब्या जउन भी उ
चाहइ, तउ अंत मँ उ तोहार एक उत्तिम दास नाहीं रही।
22किरोधी मनई मतभेद भड़कावत ह, अउर अइसा जन
जेका किरोध आवत होइ, बहोत स पापन क अपराधी बनत
ह।
23मनई क अहंकार नीचा देखावत ह, मुला उ मनई
जेकर हिरदय विनम्र होत आदर पावत ह।
24जउन चोर क संग धरत ह उ आपन स दुस्मनी करत
ह। काहेकि अदालत मँ जब ओका फुरइ बोलइ क होइ तउ
उ कछू भी कहइ स बहोत डेरान रहब्या।
25डर मनई बरे फंदा साबित होत ह, मुला जेकर आस्था
यहोवा पइ रहत ह, सुरच्छित रहत ह।
26बहोत लोग सासक क मीत होइ चाहत हीं, मुला उ
यहोवा ही अहइ, जउन लोगन क फुरइ निआव करत ह।
27सज्जन घिना करत हीं अइसे ओन लोगन स जउन
सच्चे नाहीं होतेन, अउर दुट्ठ सच्चे लोगन स घिना राखत
हीं।

याके क पूत आगूर क सूक्तियन

30 इ सबइ सूक्तियन आगूर क अहइँ, जउन याके
क पूत रहा। इ पुरुस ईतीएल अउ उक्काल स
कहत ह।
2मइँ महा बुद्धिहीन हउँ। मोहमाँ मनई क समुझदारी
बिल्कुल नाहीं अहइ।
3मइँ बुद्धि नाहीं पाएउँ अउर मोरे लगे उ पवित्तर क
गियान नाहीं अहइ।
4सरग स कउनो नाहीं आवा अउर हुआँ क रहस्य
लिआइ सका पवन क मूठी मँ कउनो नाहीं बाँधि सका।
कउनो नाहीं बाँधि सका पानी क ओढ़ना मँ अउर कउनो
नाहीं जानि सका धरती क छोर। अउर अगर कउनो एन
बातन क करि सका ह, तउ मोहसे कहा, ओकर नाउँ अउर
नाउँ ओकरे पूत क मोका बतावा, अगर तू ओका जानत
अहा।
5परमेस्सर क सब्द दोखरहित होत ह, जउन कउनो भी
ओकरी सरण जात हीं उ ओनकर ढाल होत ह। 6‘तू ओकरे
सब्दन मँ कछू जिन बढ़ा। नाहीं तउ उ तोहका सजा दइ
अउर झूठा ठहराइ।
7हे यहोवा, मइँ तोहसे दुइ बातन माँगत हउँ: ओनका मोरे
मउत स पहिले इनकार जिन करा। 8तू मोहसे मिथ्या क,
छल क दूर रखा। मोका दरिद्र जिन करा अउर न ही मोका
धनी बनावा। मोका बस रोज खाइ क देत रहा। 9कहूँ अइसा
न होइ जाइ बहोत कछू पाइके मइँ तहका तजि देउँ, अउर
कहइ लागूँ ‘कउन परमेस्सर अहइ?’ अउर जदि निर्धन बनउँ
अउर चोरी करउँ, अउर इ तरह मइँ आपन पमेस्सर क नाउँ
क लजाउँ। 10तू सुआमी स सेवक क निन्दा जिन करा नाहीं
तउ तोहका, उ अभिसाप देइ अउर तोहका ओकर भरपाइ
करइ क होइ।
11अइसे भी होत हीं जउन आपन बाप क कोसत हीं,
अउर आपन महतारी क धन्न नाहीं कहत हीं।
12होत हीं अइसे भी, जउन आपन आँखिन मँ तउ
पवित्तर बने रहत हीं किन्तु अपवित्तरता स आपन नाहीं धोवा
होत हीं।
13अइसे भी लोग अहइ जउन सोचत हीं कि उ पचे
बहोत नीक अहइ। उ पचे सोचत हीं कि उ पचे दूसर स
बेहतर अहा।
14अइसे भी होत हीं जेनकर दाँत कटार अहइँ अउर
जेनकर जबड़न मँ खंजर जड़ा रहत हीं जेहसे उ पचे इ धरती
क गरीबन क हड़प जाँइ, अउर जउन मानवन मँ स
अभावग्रस्त अहइँ ओनका उ पचे लील लेइँ।
15जोंक क दुइ बिटियन होत हीं उ पचे सदा चिचियात
रहत हीं, “द्या, द्या।” तीन चिजियन अइसी अहइँ जउन
कबहुँ नाहीं अघातिन अउर चार अइसी जउन कबहुँ बस
नाहीं कहतिन। 16कब्र, बाँझ कोख अउर धरती जउन जल
स कबहुँ आघात नाहीं, अउर उ आगी जउन कबहुँ ‘बस’
नाहीं कहतिन।
17जउन आँखिन आपन ही बापे पइ हँसत हीं, अउर
महतारी क बात मानइ स घिना करत ह, घाटी क कउआ
ओका नोंच लेइहीं अउर ओका गीध खाइ जइहीं।
18तीन बातन अइसी अहइँ जउन मोका बहोत विचित्र
लागत हीं, अउर चउथी अइसी जेका मइँ समुझ नाहीं पावत
हउँ। 19अकासे मँ उड़त भए गरूड़ क मारग, अउर लीक
नाग क जउन चट्टान पइ चला, अउर महासागरे पइ चलत
जहाज क राह अउर उ पुरूस क मारग जउन कउनो
कामिनी क पिरेम जाल मँ बँधा होइ।
20बिभीचारी मेहरारू क स्वभाव अइसी होत ह, उ खात
रहत अउर आपन मुँह पोंछ लेत, अउर कहा करत ह, “मइँ
तउ कछू भी बुरा नाहीं किहेउँ।”
21तीन बातन अइसी अहइँ जेनसे धरती काँपत ह अउर
एक चउथी अहइ जेका उ सह नाहीं कइ पावत। 22दास
जउन राजा बन जात अउर मूरख जेकर लगे प्रयाप्त भोजन
होत ह, 23अउर अइसी मेहरारू जेहसे घिना करत ह अउर
अइसी दासी जउन सुआमिनी क जगह लइ लेइ।
24चार जीव धरती पइ क अइसा अहइ जउन कि बहोत
छुद्र अहइँ मुला ओनमाँ बहोत जियादा विवेक भरा भवा
अहइ।
25चींटियन जेनमाँ सक्ती नाहीं होत हीं फुन भी उ पचे
गर्मी मँ आपन खइया क बटोरत हीं,

26बिज्जू (सापान) दुर्बल प्राणी अहइँ फुन भी उ पचे कड़ी चट्टानन मँ आपन घर बनावत हीं,
27टिड्डियन क कउनो भी राजा नाहीं होत ह फुन भी उ पचे पंक्ति बाँधिके साथ अगवा बढ़त हीं।
28अउर उ छिपकिली जउन जब सिरिफ हाथ स ही धरी जाइ सकत ह, फुन भी उ राजा क महलन मँ पाई जात ह।
29तीन प्राणी अइसे अहइँ जउन आन-बान स चलत हीं, किन्तु नाहीं, दर असल उ चार अहइ:
30एक सेर, जउन सबहिं पसुअन मँ सक्तीवाला होत ह, जउन कबहुँ कउनो स नाहीं डेरात,
31घमण्डी चाल स चलत भवा मुर्गा अउ एक बोकरा अउर उ राजा जउन आपन सेना क अगवाइ करत ह।

32तू जदि कबहुँ आपन बेवकूफी क कारण स घमण्डी हो जात ह अउर दूसर क बिरुद्ध जोजना बनावत ह तउ एका बन्द करा अउर जउन तू करत ह ओकरे बरे सोच्या।
33जइसे मथानी स दूध निकरत ह माखन अउर नाक मरोड़इ स लहू निकरि आवत ह वइसे ही जगाउब किरोध क होत ह झगड़न क भड़काउब।

राजा लमुएल क सूक्तियन

31 इ सबइ सूक्तियन राजा लमूएल क, जेनका ओका ओकर महतारी सिखाए रही।
2तू मोर पूत अहा उ पूत जउन मोका पिआरा अहइ।
तोहका पावइ क मइँ परमेस्सर स मन्नत माने रहेउँ। 3तू
बियर्थ मँ आपन सक्ती मेहररूअन पइ जिन खर्च करा।
मेहरारू ही राजा लोगन क बिनास क कारण होत ह एह
बरे तू ओन पइ आपन छय जिन करा। 4हे लमूएल! राजा
क मधूपान सोभा नाहीं देता, अउर न ही इ कि सासक क
यवसुरा ललचाइ। 5नाहीं तउ, उ पचे दाखरस क बहोत
जियादा पान कइके, विधान क व्यवस्था क बिसरि जइहीं
अउर उ पचे सारे दीन दलितन क अधिकारन क छोरि
लेइहीं। 6ओन लोगन क जौ क दाखरस पिअइ द्या जउन
बहोत बड़ा विपत्ती मँ अहइ। 7उ पचे पिअइ अउर आपन
दीनता क बरे मँ बिसर जाइ। उ पचे आपन मुसीबतन क
याद नाही राखइही।
8तू ओनके बरे बोल जउन कबहुँ भी आपन बरे बोल
नाहीं पावत हीं, अउर ओन सबन क, अधिकारन बरे बोल
जउन असाहय अहइ अउर विपत्ती क मारा अहइ। 9तू ओन
बातन क हेतु डटिके खड़ा रह जेनका तू जानत ह कि पचे
उचित, निआवपूर्ण अहा। अउर बिना पच्छ-पात क सब क
निआव कर। गरीब अउर जरुरत मन्द लोगन क अधिकार
क रच्छा करा।

आदर्स पत्नी

10गुणवन्ती पत्नी कउन पाइ सकत ह? उ जन मणि-मणिकन स कहूँ जियादा कीमती अहइ।
11ओकर पति ओकर बिस्सास कइ सकत ह। ओका कउनो भी अच्छी चिजियन क कमी नाही होइ।
12सतपत्नी पति क संग उत्तिम व्यवहार करत ह। आपन जिन्नगी भर ओकरे बरे कबहुँ विपत्ति नाहीं उपजावत।
13उ हमेसा ऊनी अउ सूती ओढ़ना बनावइ मँ व्यस्त रहत ह।
14उ उ पानी क जहाज क नाईं अहइ जउन दूर देस स आवात ह अउर हर कहुँ स घरे पर भोज्य वस्तु लिआवत ह।
15भिंसारे उठिके उ खइया क बनावत ह। अपने परिवारे क अउर दासियन क हींसा ओनका देत ह।
16उ लखिके अउ परखिके खेत मोल लेत ह। आपन कमात भवा धन स दाख क बारी लगावत ह।
17उ बड़ी मेहनत करत ह। उ आपन सबहिं काम करइ क समर्थ अहइ।
18जब भी उ आपन बनाईं चीज क बेंचत ह, तउ लाभ कमात ह। उ देर रात तलक दीप जलाइ क काम करत ह।
19उ सूत कातत अउर आपन वस्तु बुनत ह।
20उ हमेसा ही दीनदु:खी क दान देत ह, अउर कंगाल जल क सहायता करत ह।
21जब सर्दी पड़त ह तउ उ आपन परिवार बरे चिंतित नाहीं होत ह। काहेकि उ सबहिं क उत्तिम गरम ओढ़ना दइ रखे अहइ।
22उ चादर बनावत ह अउर बिस्तरा पइ फैलावत ह। उ सने स बना भवा बढ़िया अउर बेंगनी ओढ़ना पहिरत ह।
23लोग ओकरे पति क आदर करत ही उ जगह पावत ह नगर प्रमुखन क बीच।
24उ अति उत्तिम बइपारी बनत ह। उ ओढ़नन अउर कमरबंदन क बनाइके ओनका बइपारी लोगन क बेचत ह।
25उ सक्तीवाली अहइ, अउर आन-बान वाली अहइ। अउर बिस्सास क संग भविस्य क ओर लखत ह।
26जब उ बोलत ह, उ विवेकपूर्ण रहत ह। ओकरी जीभ लोगन क पिरेम करइ अउर दाया करइ क सिच्छा देत ह।
27उ कबहुँ भी आलस नाहीं करत अउर आपन घर बार क चिजियन पइ हर एक दिन धियान रखत ह।
28ओकर बच्चन खड़ा होत हीं अउर ओका आदर देत हीं अउर ओकरे बारे मँ अच्छी बातन करत ह। ओकर पति ओकरी तारीफ करत ह।
29ओकर पति कहत ह, "बहोत स उच्चकोटि क मेहरारूअन अहइ। किन्तू ओन सब मँ तू ही सर्वोत्तम पत्नी अहा।"
30आकर्षण धोकाबाज़ अहइ अउर सुन्नरता दुइ पल क अहइ। मुला उ मेहरारू जेका यहोवा क डर बाटइ, ओकरी तारीफ हाइ चाही।
31ओका उ प्रतिफल द्या जेकर उ जोग्ग अहइ। अउर जउन काम उ किहेस ह, ओनके बरे सारे लोग क बीच मँ ओकर तारीफ करा।